

वाद्यरंग

कक्षा 9–12वीं के लिए

वाद्ययंत्र के उपयोग से संबंधित मार्गदर्शिका

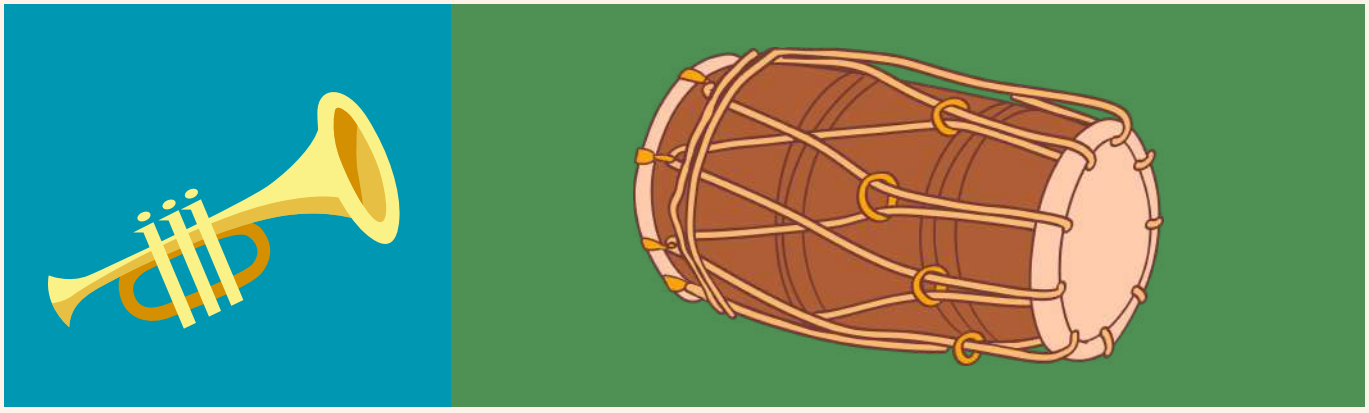

बिहार राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद् पटना,बिहार द्वारा विकसित

दिशाबोध

श्री यतेंद्र कुमार पाल (भा.प्र.से)
निदेशक
राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्
पटना, बिहार

श्री सुरेन्द्र कुमार
संयुक्त निदेशक (डायट)
राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्
पटना, बिहार

समन्वयक

डॉ. संतोष कुमार राणा
व्याख्याता (कला एवं शिल्प विभाग)
राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्
पटना, बिहार

मार्गदर्शिका विकास समूह

डॉ. मधु कुमारी, व्याख्याता, कला एवं शिल्प, डायट शिवहर
समीर कुमार, व्याख्याता, कला एवं शिल्प, डायट गया, पंचायती अखाड़ा, गया
यशवंत कुमार शर्मा, व्याख्याता, कला एवं शिल्प, डायट पूसा, समस्तीपुर
अजीत कुमार, व्याख्याता, कला एवं शिल्प, डायट, डुमराँव, बक्सर
शिव कुमार, शिक्षक, उत्क्रमित मध्य विद्यालय, नारायणपुर, बिक्रम, पटना
साधना कुमारी, शिक्षिका, उच्च माध्यमिक विद्यालय, ईसर टोल, विभूतिपुर, समस्तीपुर
मंगलेश कुमार, शिक्षक, उच्च माध्यमिक विद्यालय, बेला पंचरुखी, समस्तीपुर
आस्था दीपाली, शिक्षिका, राजकीयकृत उच्च माध्यमिक विद्यालय, कुढ़नी, मुज़फ़्फ़रपुर
संगीत मल्लिक, शिक्षक, उच्च माध्यमिक विद्यालय, कटका सिंहवाड़ा, दरभंगा
साहित्य मल्लिक, शिक्षक, पीएम श्री प्लस टू जयानंद उच्च विद्यालय बहेड़ा, दरभंगा
उज्ज्वल कुमार, शिक्षक, जे. एम. उच्च माध्यमिक विद्यालय, कसौर, दरभंगा
श्रुति मौसम, शिक्षिका, उच्च माध्यमिक विद्यालय बसंतपुर, सुपौल
डॉ. भवानी शारदे, शिक्षिका, उत्क्रमित उच्च माध्यमिक विद्यालय कुरथौल, फुलवारीशरीफ, पटना

शुभकामना संदेश



संगीत मानव सभ्यता की प्राचीनतम एवं समृद्ध कलाओं में से एक है। यह केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं, बल्कि हमारी संस्कृति, परंपरा, संवेदना और रचनात्मक अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। भारतीय संगीत परंपरा में वाद्य यंत्रों की अपनी विशिष्ट एवं गौरवपूर्ण भूमिका रही है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने शिक्षा को अनुभवात्मक, कला-समेकित एवं बहुविषयक बनाने पर विशेष बल दिया है। इस दृष्टि से विद्यालयों में संगीत एवं संगीत वाद्ययंत्रों का प्रभावी समावेश विद्यार्थियों को सीखने के नए और सृजनात्मक अवसर प्रदान करता है। जब विद्यार्थी किसी वाद्य को देखते, सुनते, स्पर्श करते और स्वयं बजाने का प्रयास करते हैं, तब वे स्वर, लय, ताल, गति, ध्वनि एवं विराम जैसी अवधारणाओं को केवल पढ़ने के साथ उसे अनुभव भी करते हैं। इससे उनका संज्ञानात्मक, भावात्मक एवं मनो-गत्यात्मक विकास भी समग्र रूप से होता है।

विद्यालयी संगीत शिक्षा का उद्देश्य केवल विद्यार्थियों को कुशल वादक बनाना नहीं, बल्कि उनमें संगीत के प्रति रुचि, संवेदनशीलता, रचनात्मकता एवं सौंदर्यबोध विकसित करना तथा उन्हें अपनी स्थानीय एवं भारतीय सांगीतिक परंपराओं से जोड़ना है।

इस मार्गदर्शिका के माध्यम से शिक्षकों को विद्यालयों में उपलब्ध कराए गए वाद्ययंत्रों से परिचय एवं वादन के मूल सिद्धांतों के साथ-साथ वाद्ययंत्रों के सुरक्षित एवं उचित उपयोग, रख-रखाव तथा विद्यालयी शिक्षण-अधिगम में उनके प्रभावी प्रयोग की व्यावहारिक समझ प्रदान करने का प्रयास किया गया है। मुझे विश्वास है कि यह मार्गदर्शिका शिक्षकों को अपनी कक्षाओं में संगीत को अधिक अनुभवात्मक, सहभागितापूर्ण, समावेशी एवं आनंददायी बनाने में उपयोगी मार्गदर्शन प्रदान करेगा।

हमारा प्रयास है कि प्रत्येक विद्यालय में कला एवं संगीत केवल पाठ्यक्रम का एक विषय न रहकर विद्यार्थियों के सृजन, अभिव्यक्ति और आनंदपूर्ण अधिगम का माध्यम बने। इस दिशा में शिक्षकों की सक्रिय एवं रचनात्मक भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है।

मैं इस मार्गदर्शिका के निर्माण एवं उपयोग से जुड़े सभी विशेषज्ञों एवं शिक्षकों को शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ और आशा करता हूँ कि इसके माध्यम से विद्यालयों में संगीत शिक्षा को नई दिशा एवं नई ऊर्जा प्राप्त होगी।

श्री यतेंद्र कुमार पाल (भा.प्र.से)
निदेशक
राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्
पटना, बिहार

शुभकामना संदेश



संगीत शब्दों से परे जाकर मन और भावनाओं को जोड़ने वाली एक ऐसी भाषा है, जिसे हर व्यक्ति अपने अनुभव के स्तर पर समझ सकता है। विद्यालय में संगीत का स्थान केवल गायन या वादन तक सीमित नहीं है; यह बच्चों को सुनने, समझने, महसूस करने, सृजन करने और साथ मिलकर सीखने का अवसर देता है। वाद्ययंत्र इस अनुभव को और अधिक जीवंत एवं सहभागी बनाते हैं।

संगीत शब्दों से परे जाकर मन और भावनाओं को जोड़ने वाली एक ऐसी भाषा है, जिसे हर व्यक्ति अपने अनुभव के स्तर पर समझ सकता है। विद्यालय में संगीत का स्थान केवल गायन या वादन तक सीमित नहीं है; यह बच्चों को सुनने, समझने, महसूस करने, सृजन करने और साथ मिलकर सीखने का अवसर देता है। वाद्ययंत्र इस अनुभव को और अधिक जीवंत एवं सहभागी बनाते हैं।
विद्यालयों में वाद्ययंत्रों के उपयोग को प्रभावी बनाने में शिक्षक की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। किसी वाद्ययंत्र को पहली बार हाथ में लेना, उसकी ध्वनि को पहचानना, स्वर और ताल के साथ प्रयोग करना तथा समूह में मिलकर प्रस्तुति देना विद्यार्थियों के लिए स्वयं में एक सीखने की प्रक्रिया है।

प्रस्तुत मार्गदर्शिका इसी सोच को आगे बढ़ाने का एक प्रयास है। इसमें वाद्ययंत्रों को केवल तकनीकी जानकारी के विषय के रूप में नहीं, बल्कि सीखने, सृजन करने और सांस्कृतिक विरासत से जुड़ने के माध्यम के रूप में देखने की दृष्टि विकसित करने का प्रयास किया गया है। आशा है कि यह सामग्री शिक्षकों को वाद्ययंत्रों के प्रयोग को अपनी शिक्षण-पद्धति का सहज हिस्सा बनाने तथा विद्यार्थियों के लिए संगीत को अनुभव और आनंद से जोड़ने में सहायक होगी। मुझे विश्वास है कि इस पहल के माध्यम से विद्यालयों में संगीत की ध्वनि केवल मंचीय प्रस्तुतियों तक सीमित न रहकर कक्षा-कक्ष में सीखने की प्रक्रिया का हिस्सा बनेगी और हमारे विद्यार्थी अपनी स्थानीय एवं भारतीय सांस्कृतिक विरासत को समझते हुए अपनी सृजनात्मक क्षमता को नई दिशा दे सकेंगे।

इस उपयोगी शैक्षिक प्रयास के लिए सभी संबंधित विशेषज्ञों एवं शिक्षकों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

श्री सुरेन्द्र कुमार
संयुक्त निदेशक (डायट)
राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्
पटना , बिहार

अनुक्रम

1. परिचय 6
2. उद्देश्य 7
3. वाद्ययंत्रों के प्रयोग की आवश्यकता 8
4. विद्यालय में उपलब्ध कराए गए वाद्ययंत्रों की सूची 9
5. विद्यालय में उपलब्ध कराए गए बैंड की सूची 10
6. वाद्ययंत्रों का परिचय 11
   - हारमोनियम
   - तबला सेट
   - ढोलक / नाल
   - 61-की (key) वाला कीबोर्ड
   - पी.ए. सिस्टम (स्पीकर एवं माइक्रोफोन)
   - वर्जिन प्लास्टिक झीका (बड़ा, 10 झंकार/जिंगल)
   - डफली (टैम्बोरिन)
   - वर्जिन प्लास्टिक झीका (छोटा, 6 झंकार/जिंगल)
   - पीतल का मंजीरा
   - बाँसुरी (स्टील)
   - घुँघरू (एक जोड़ी, प्रत्येक में 25 घुँघरू)

6. बैंड का परिचय 22
   - पीतल का ट्रम्पेट (Brass Trumpet)
   - स्टेनलेस स्टील साइड ड्रम (स्टिक सहित)
   - स्टेनलेस स्टील बास ड्रम / पी.टी. ड्रम (बीटर सहित)
   - पी.टी. ड्रम स्टैंड
   - मेजर स्टिक / लीडिंग स्टिक
   - पीतल का बिगुल (Brass Bugle)
   - पीतल का कॉर्नेट (Brass Cornet)
   - स्टील की बांसुरी (Flutes)
   - छोटी मराकास (Maracas Small)
   - बड़ी मराकास (Maracas Big)
   - प्लास्टिक झीका / झाल (10 झंकारियों सहित)
   - 8 इंच स्टेनलेस स्टील झांझ (Cymbals)
   - 10 इंच स्टेनलेस स्टील झांझ (Cymbals)
   - बैंड यूनिफॉर्म

7. रखरखाव संबंधित सामान्य निर्देश 34
8. क्या करें एवं क्या न करें 37
   - सभी वाद्ययंत्रों के लिए
   - मार्चिंग बैंड वाद्ययंत्रों के लिए
   - बैंड मार्चिंग उपकरण के लिए

9. प्रधानाध्यापक के लिए सुझाव 40
10. संदर्भ सूची 41

परिचय

संगीत मानव सभ्यता की सबसे प्राचीन एवं समृद्ध कलाओं में से एक है और वाद्ययंत्र इस कला की अभिव्यक्ति का प्रमुख माध्यम। वाद्ययंत्र केवल ध्वनि उत्पन्न करने का उपकरण नहीं हैं, बल्कि वे संगीत की भाषा, संस्कृति, परंपरा और रचनात्मकता के संवाहक भी हैं। भारतीय संगीत परंपरा में वाद्ययंत्रों का विशेष महत्व रहा है। प्राचीन काल से ही वीणा, बांसुरी, मृदंग, तबला, पखावज, शंख तथा विभिन्न लोक वाद्य सामाजिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक जीवन का अभिन्न अंग रहे हैं। इन वाद्ययंत्रों के माध्यम से हमारी सांगीतिक विरासत पीढ़ी-दर-पीढ़ी संरक्षित एवं समृद्ध होती रही है।

विद्यालयी परिवेश में वाद्ययंत्र विद्यार्थियों को सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से जोड़ने का एक सशक्त माध्यम हैं। जब बच्चे विभिन्न वाद्ययंत्रों की ध्वनियों को सुनते हैं, उनके आकार, बनावट और संरचना का अवलोकन करते हैं तथा उन्हें स्वयं बजाने का अभ्यास करते हैं, तब वे स्वर, ताल, लय, गति, ध्वनि और विराम जैसी संगीत संबंधी अवधारणाओं को प्रत्यक्ष अनुभव के माध्यम से सीखते और आत्मसात करते हैं। सामूहिक रूप से वादन करने से उनमें समन्वय, सहभागिता और प्रस्तुति की भावना भी विकसित होती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 अनुभवात्मक अधिगम, कला-समेकित शिक्षा, बहुआयामी अधिगम तथा भारतीय ज्ञान परंपरा को शिक्षा का अभिन्न अंग बनाने पर विशेष बल देती है। इस परिप्रेक्ष्य में वाद्ययंत्रों का परिचय एवं उनका प्रभावी प्रयोग विद्यार्थियों में रचनात्मकता, नवाचार, सहयोग, संप्रेषण, सौंदर्यबोध तथा समस्या-समाधान जैसी 21वीं सदी की आवश्यक दक्षताओं के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

विद्यालय स्तर पर वाद्ययंत्रों का उद्देश्य विद्यार्थियों को पेशेवर कलाकार बनाना नहीं है, बल्कि उनमें संगीत के प्रति रुचि, संवेदनशीलता एवं सौंदर्यबोध विकसित करना है। साथ ही, यह उन्हें भारतीय एवं स्थानीय सांगीतिक परंपराओं से परिचित कर सांस्कृतिक विविधता के प्रति सम्मान और अपनत्व की भावना विकसित करता है। विभिन्न प्रकार के वाद्ययंत्र जैसे- तत्त, सुषिर, अवनद्ध तथा घन वाद्य के माध्यम से विद्यार्थी ध्वनि उत्पादन की विभिन्न विधियों को समझते हैं तथा संगीत की वैज्ञानिक एवं कलात्मक दोनों दृष्टियों से परिचित होते हैं।

शिक्षक इस प्रक्रिया के प्रमुख मार्गदर्शक होते हैं और यह आवश्यक नहीं कि सभी शिक्षक उपलब्ध सभी वाद्ययंत्रों के वादन में पारंगत हो। ऐसे में उपलब्ध कराए गए वाद्ययंत्रों के वादन का आधारभूत ज्ञान, उनका सुरक्षित एवं उचित उपयोग, रख-रखाव, शिक्षण-अधिगम में उनका समावेश तथा विभिन्न आयु-समूहों के अनुरूप गतिविधियों का चयन प्रत्येक संगीत शिक्षक के लिए आवश्यक है। यह मार्गदर्शिका शिक्षकों को संगीत वाद्ययंत्रों के परिचय, वर्गीकरण, शैक्षिक उपयोग, वादन के मूल सिद्धांतों तथा विद्यालयी संगीत शिक्षण में उनके प्रभावी समेकन की समझ विकसित करने के उद्देश्य से तैयार किया गया है ताकि संगीत शिक्षा अधिक समावेशी, अनुभवात्मक एवं गुणवत्तापूर्ण बन सके और वाद्ययंत्रों का समुचित एवं सार्थक प्रयोग शिक्षण अधिगम में किया जा सके।



उद्देश्य

इस मार्गदर्शिका का उद्देश्य शिक्षकों को वाद्ययंत्रों के स्वरूप, वर्गीकरण, विशेषताओं, वादन की मूलभूत तकनीकों तथा उनके शैक्षिक उपयोग की समग्र समझ विकसित करना है, ताकि वे विद्यालयी संगीत शिक्षण को अधिक प्रभावी, अनुभवात्मक, समावेशी एवं विद्यार्थी केंद्रित बना सकें। यह मार्गदर्शिका शिक्षकों को वाद्ययंत्रों के माध्यम से विद्यार्थियों में संगीतबोध, सृजनात्मकता, सांस्कृतिक संवेदनशीलता तथा जीवनोपयोगी कौशलों के विकास के लिए आवश्यक ज्ञान, कौशल एवं दृष्टिकोण विकसित करने में सहायक होगा।

इस मार्गदर्शिका के अध्ययन के उपरांत शिक्षक सक्षम होंगे:

- वाद्ययंत्रों की सैद्धांतिक, प्रायोगिक, सांस्कृतिक एवं सौंदर्यात्मक महत्ता को समझने तथा उसके अनुरूप शिक्षण की योजना बनाने में।
- भारतीय वाद्ययंत्रों के प्रमुख वर्गों: तत्, सुषिर, अवनद्ध एवं घन वाद्य का परिचय विद्यार्थियों को सरल एवं रोचक ढंग से कराने में।
- विभिन्न वाद्ययंत्रों की संरचना, ध्वनि-उत्पादन की प्रक्रिया, वादन की मूलभूत तकनीकों एवं उनके उपयोग को स्पष्ट करने में।
- विद्यार्थियों में श्रवण कौशल, लयबोध, एकाग्रता, समन्वय, अनुशासन, आत्मविश्वास तथा रचनात्मक अभिव्यक्ति का विकास करने में।
- व्यक्तिगत एवं सामूहिक वादन के माध्यम से सहयोग, सहभागिता, नेतृत्व, उत्तरदायित्व तथा टीम भावना को प्रोत्साहित करने में।
- स्थानीय, लोक एवं पारंपरिक वाद्ययंत्रों को विद्यालयी संगीत शिक्षण में समाविष्ट कर भारतीय सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण एवं संवर्धन के प्रति विद्यार्थियों में संवेदनशीलता विकसित करने में।
- वाद्ययंत्रों के सुरक्षित उपयोग, उचित रख-रखाव तथा संरक्षण के प्रति विद्यार्थियों में उत्तरदायित्वपूर्ण व्यवहार विकसित करने में।
- विद्यालय की प्रार्थना सभा, सांस्कृतिक कार्यक्रमों, कला उत्सवों, बालसभा तथा अन्य सह-शैक्षिक गतिविधियों में वाद्ययंत्रों का उद्देश्यपूर्ण एवं प्रभावी उपयोग सुनिश्चित करने में।

वाद्ययंत्रों के प्रयोग की आवश्यकता

संगीत शिक्षा में वाद्ययंत्रों का स्थान अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। वाद्ययंत्र न केवल संगीत की अभिव्यक्ति के प्रभावी माध्यम हैं, बल्कि वे विद्यार्थियों को संगीत के मूलभूत तत्त्वों: स्वर, लय, ताल, गति एवं ध्वनि को अनुभवात्मक रूप से समझने का अवसर भी प्रदान करते हैं। विद्यालयी स्तर पर वाद्ययंत्रों का परिचय एवं उनका नियमित प्रयोग संगीत शिक्षण को अधिक प्रभावी, सहभागितापूर्ण तथा आनंददायी बनाता है। इसके माध्यम से विद्यार्थी केवल वादन का कौशल ही नहीं सीखते, बल्कि संज्ञानात्मक, भावात्मक, सामाजिक एवं सृजनात्मक विकास से जुड़े अनेक जीवनोपयोगी कौशल भी अर्जित करते हैं।

वाद्ययंत्रों के प्रयोग की आवश्यकता :

अनुभवात्मक अधिगम को सुदृढ़ बनाने के लिए

वाद्ययंत्रों के माध्यम से विद्यार्थी संगीत की अवधारणाओं को केवल सुनते नहीं, बल्कि उन्हें प्रत्यक्ष अनुभव करते हैं। इससे सीखना अधिक सार्थक, स्थायी एवं रुचिकर बनता है।

संगीत की मूल अवधारणाओं को स्पष्ट करने के लिए

स्वर, लय, ताल, गति, मात्रा, विराम एवं ध्वनि जैसे संगीत के आधारभूत तत्त्वों को वाद्ययंत्रों के माध्यम से सरलता एवं प्रभावशीलता के साथ समझाया जा सकता है।

विद्यार्थियों में संगीत के प्रति रुचि विकसित करने के लिए

विभिन्न वाद्ययंत्रों का परिचय एवं उनका प्रयोग विद्यार्थियों में जिज्ञासा, उत्साह तथा संगीत के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करता है।

रचनात्मकता एवं अभिव्यक्ति को प्रोत्साहित करने के लिए

वाद्ययंत्र विद्यार्थियों को अपनी भावनाओं एवं कल्पनाओं को संगीत के माध्यम से अभिव्यक्त करने का अवसर प्रदान करते हैं, जिससे उनकी सृजनात्मक क्षमता का विकास होता है।

जीवन-कौशलों के विकास के लिए

नियमित वादन अभ्यास से विद्यार्थियों में एकाग्रता, अनुशासन, धैर्य, समन्वय, आत्मविश्वास, श्रवण क्षमता तथा सूक्ष्म मोटर कौशल का विकास होता है।

सहयोगात्मक अधिगम को बढ़ावा देने के लिए

समूह वादन विद्यार्थियों में सहयोग, सहभागिता, नेतृत्व, उत्तरदायित्व एवं टीम भावना का विकास करता है तथा सामूहिक कार्य संस्कृति को सुदृढ़ बनाता है।

भारतीय सांस्कृतिक विरासत से जोड़ने के लिए

वाद्य-आधारित गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थी भारतीय कला एवं संस्कृति की विविधता से परिचित होते हैं तथा सांस्कृतिक संरक्षण के प्रति संवेदनशील बनते हैं।

विद्यालय में उपलब्ध कराये गए वाद्ययंत्रों की सूची

क्रमांक	वाद्ययंत्र का नाम	संख्या	बॉक्स संख्या
1	हारमोनियम	1	बॉक्स–6
2	तबला सेट	1	बॉक्स–7
3	ढोलक / नाल	1	बॉक्स–8
4	61-की वाला कीबोर्ड	1	बॉक्स–9
5	पी.ए. सिस्टम (स्पीकर एवं माइक्रोफोन)	1	बॉक्स–10
6	वर्जिन प्लास्टिक झीका (बड़ा, 10 झंकार/ जिंगल)	2	बॉक्स–11
7	डफली (टैम्बोरिन)	2	बॉक्स–11
8	वर्जिन प्लास्टिक झीका (छोटा, 6 झंकार/ जिंगल)	2	बॉक्स–11
9	पीतल का मंजीरा	2	बॉक्स–11
10	बाँसुरी (स्टील)	2	बॉक्स–11
11	घुँघरू (एक जोड़ी, प्रत्येक में 25 घुँघरू)	2	बॉक्स–11

विद्यालय में उपलब्ध कराये गए बैंड की सूची

क्रमांक	वाद्ययंत्र का नाम	संख्या	बॉक्स संख्या
1	पीतल का ट्रम्पेट (Brass Trumpet)	3	बॉक्स–12
2	स्टेनलेस स्टील साइड ड्रम (स्टिक सहित)	8	बॉक्स–13
3	स्टेनलेस स्टील बास ड्रम / पी.टी. ड्रम (बीटर सहित)	2	बॉक्स–14
4	पी.टी. ड्रम स्टैंड	1	बॉक्स–15
5	मेजर स्टिक / लीडिंग स्टिक	1	बॉक्स–16
6	पीतल का बिगुल (Brass Bugle)	3	बॉक्स–17
7	पीतल का कॉर्नेट (Brass Cornet)	3	बॉक्स–18
8	स्टील की बांसुरी (Flutes)	6	बॉक्स–19
9	छोटी मराकास (Maracas Small)	5	बॉक्स–19
10	बड़ी मराकास (Maracas Big)	3	बॉक्स–19
11	प्लास्टिक झीका / झाल (10 झंकारियों सहित)	6	बॉक्स–19
12	8 इंच स्टेनलेस स्टील झांझ (Cymbals)	3	बॉक्स–19
13	10 इंच स्टेनलेस स्टील झांझ (Cymbals)	3	बॉक्स–19
14	मोज़ों सहित यूनिफॉर्म	21	बॉक्स–20
15	टोपी (Hat)	1	बॉक्स–20
16	जूते (Shoes)	21	बॉक्स–21

वाद्ययंत्र का परिचय

हारमोनियम

- **वाद्य का प्रकार :** सुषिर वाद्य।
- **आविष्कारक / विकासकर्ता :** अलेक्जेंडर ढेबेन (फ्रांस, 1842)
- **संक्षिप्त इतिहास :** हारमोनियम का आविष्कार 19वीं सदी में सर्वप्रथम यूरोप में हुआ था। लेकिन समय के साथ यह वाद्ययंत्र भारतीय संगीत के अनुरूप परिवर्तित हुआ और आज शास्त्रीय, उपशास्त्रीय, सुगम एवं लोक संगीत का प्रमुख संगत वाद्य है।
- **बजाने का तरीका :** एक हाथ से धौंकनी चलाकर तथा दूसरे हाथ से की (Keys) ढबाकर बजाया जाता है ।
- **मुख्य भाग :** की-बोर्ड, धौंकनी, रीड, स्टॉपर, बॉडी।
- **प्रमुख उपयोग :** स्वराभ्यास, गायन संगत, भजन, समूहगान, संगीत शिक्षण।
- **शैक्षिक महत्व :** स्वर, राग एवं श्रवण क्षमता का विकास।
- **रख-रखाव एवं सावधानियाँ :** धूल, नमी एवं तेज धूप से बचाकर रखें।



प्रयोग करने की विधि

- हारमोनियम को समतल स्थान पर रखकर सही मुद्रा में बैठें।
- एक हाथ से धौंकनी को समान गति से चलाएँ।
- दूसरे हाथ से सही उँगली क्रम का उपयोग करते हुए पट्टी का बटन ढबाएं ।
- पहले सरगम (सा रे ग म...) का अभ्यास करें, फिर अलंकार एवं सरल धुनें बजाएँ।
- अभ्यास के दौरान लय एवं स्वर की शुद्धता बनाए रखें।
- प्रयोग के बाद हारमोनियम को साफ करके कवर से ढककर सुरक्षित रखें।

तबला

- **वाद्य का प्रकार :** अवनद्ध (ताल) वाद्य।
- **आविष्कारक/विकासकर्ता :** निश्चित आविष्कारक ज्ञात नहीं है पर ऐसा माना जाता है कि अमीर खुसरो ने 13वीं-14 वीं शताब्दी में तबले का आविष्कार किया था इसके साथ कुछ संगीत के विद्वानों का यह भी मानना है कि तबले का विकास 18वीं शताब्दी में उस्ताद सिद्धार खान ने किया था और बाद में उत्तर भारत में इसका क्रमिक विकास हुआ।
- **संक्षिप्त इतिहास :** हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत का प्रमुख ताल वाद्य, जिसका प्रयोग कई शताब्दियों से किया जा रहा है।
- **बजाने का तरीका :** हथेली एवं उँगलियों से ढ़ायाँ और बायाँ भाग बजाया जाता है।
- **मुख्य भाग :** ढ़ायाँ, बायाँ (डग्गा), स्याही, गजरा।
- **प्रमुख उपयोग :** शास्त्रीय संगीत, कथक, भजन।
- **शैक्षिक महत्व :** ताल, लय एवं एकाग्रता का विकास।
- **रख-रखाव एवं सावधानियाँ :** चमड़े को नमी एवं अत्यधिक गर्मी से बचाएँ।

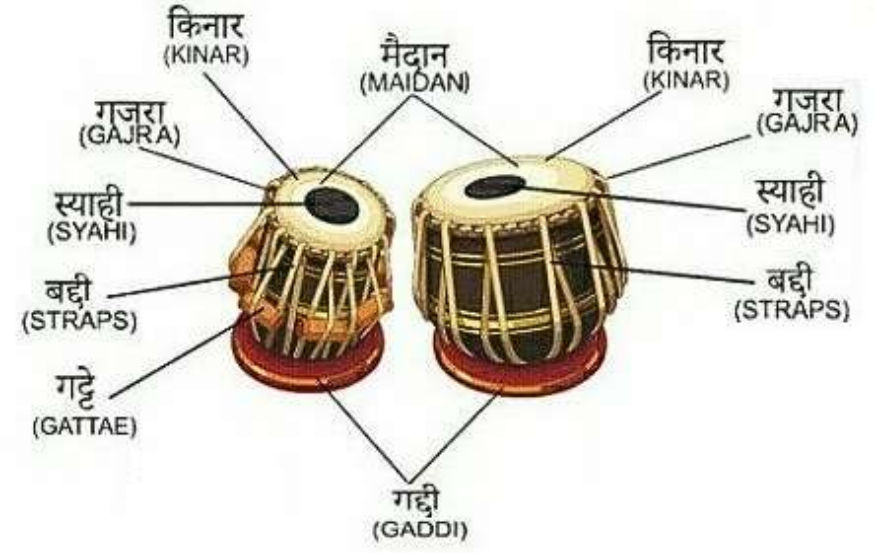

प्रयोग करने की विधि

- तबले को समतल स्थान पर सही स्थिति में रखें और आरामदायक मुद्रा में बैठें।
- ढ़ायाँ तबला (ढ़यॉं) और बायाँ तबला (बायाँ/डग्गा) सही हाथों की स्थिति में रखें।
- तबला वादन से पूर्व उसे सही सुर में मिलाएं एवं गजरे पर ज्यादा चोट करने से बचें।
- उँगलियों एवं हथेली की सही तकनीक से मूल बोल (धा, धिन, ना, ता, तिन) का अभ्यास करें।
- लय बनाए रखते हुए सरल ताल (जैसे तीनताल, कहरवा, ढ़ादरा) का नियमित अभ्यास करें।
- अभ्यास के बाद तबले को साफ करें, कवर से ढककर सुरक्षित स्थान पर रखें।

ढोलक/नाल

- **वाद्य का प्रकार :** अवनद्ध वाद्य।
- **आविष्कारक / विकासकर्ता :** भारतीय लोक परंपरा द्वारा विकसित।
- **संक्षिप्त इतिहास :** भारत का प्राचीन लोक वाद्य, जो विभिन्न क्षेत्रों की सांस्कृतिक परंपराओं का अभिन्न अंग है।
- **बजाने का तरीका :** दोनों हाथों से दोनों ओर की चमड़े की झिल्ली पर आघात करके।
- **मुख्य भाग :** लकड़ी का खोल, चमड़े की झिल्ली, रस्सी/नट-बोल्ट।
- **प्रमुख उपयोग :** लोकगीत, भजन, नृत्य एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम।
- **शैक्षिक महत्व :** तालबोध एवं समूह समन्वय का विकास।
- **रख-रखाव एवं सावधानियाँ :** झिल्ली को सूखा रखें एवं समय-समय पर कसाव जाँचें।



प्रयोग करने की विधि

- ढोलक/नाल को समतल स्थान पर सही स्थिति में रखकर आरामदायक मुद्रा में बैठें।
- वादन से पूर्व ढोलक/नाल में लगे छल्ले को खींचकर अथवा नट-बोल्ट को कसकर या ढीला कर सुर से मिलान करें।
- दोनों हाथों को सही स्थान पर रखें तथा वाद्य की पकड़ संतुलित रखें।
- दाएँ और बाएँ भाग पर उँगलियों एवं हथेली से मूल बोलों का अभ्यास करें।
- लय बनाए रखते हुए सरल तालों एवं गीतों की संगत का नियमित अभ्यास करें।
- अभ्यास के बाद ढोलक/नाल में लगे छल्ले अथवा नट-बोल्ट को ढीला कर के ही रखें एवं कवर लगाकर सुरक्षित एवं सूखी जगह पर रखें।

कीबोर्ड

- **वाद्य का प्रकार :** इलेक्ट्रॉनिक कीबोर्ड वाद्य।
- **आविष्कारक / विकासकर्ता :** अमेरिकी इंजीनियर रॉबर्ट बॉब मोग ने संगीतकार हर्ब ड्यूश के साथ मिलकर पहले कमर्शियल वोल्टेज-नियंत्रित इलेक्ट्रॉनिक सिंथेसाइज़र (Moog Synthesizer) का निर्माण किया जिसमें पियानो जैसी कीबोर्ड प्रणाली जोड़ी गई थी। आधुनिक डिजिटल पोर्टेबल कीबोर्ड का विकास इसके बाद 1970 और 1980 के दशकों में हुआ।
- **संक्षिप्त इतिहास :** आधुनिक संगीत शिक्षा एवं मंचीय प्रस्तुतियों का बहुउपयोगी वाद्य।
- **बजाने का तरीका :** दोनों हाथों से की (Keys) दबाकर।
- **मुख्य भाग :** की-बोर्ड, डिस्प्ले, स्पीकर, कंट्रोल पैनल।
- **प्रमुख उपयोग :** संगीत संयोजन, मंचीय प्रस्तुति आदि।
- **शैक्षिक महत्व :** आधुनिक संगीत तकनीक का ज्ञान विकसित करता है।
- **रख-रखाव एवं सावधानियाँ :** हाई वोल्टेज बिजली के एवं नमी से सुरक्षित रखें।



प्रयोग करने की विधि

- कीबोर्ड को समतल स्थान पर रखें तथा विद्युत आपूर्ति/बैटरी चालू करें।
- वादन के पूर्व प्लग लगा कर सबसे पहले कीबोर्ड को ऑन करें फिर स्क्रीन से अपनी पसंद की वाद्ययंत्र (जैसे- पियानो, गिटार, सितार, बासुरी आदि) की आवाज और उपयुक्त स्केल एवं ताल (Rhythm) का चयन करें।
- हाथ की उँगलियों के क्रम का उपयोग करते हुए कीज़ (Keys) दबाकर स्वर बजाना प्रारम्भ करें।
- सरगम, अलंकार एवं सरल धुनों का लय के साथ नियमित अभ्यास करें।
- अभ्यास के बाद कीबोर्ड बंद करें, साफ करें तथा कवर लगाकर सुरक्षित स्थान पर रखें।

पी.ए. सिस्टम

(Public Address system)

(स्पीकर एवं माइक्रोफोन सहित)

- **वाद्य का प्रकार :** ध्वनि प्रवर्धन प्रणाली (Audio Equipment)।
- **आविष्कारक / विकासकर्ता :** आधुनिक ध्वनि अभियंताओं द्वारा विकसित तकनीक।
- **संक्षिप्त इतिहास :** पी. ए. सिस्टम एक प्रकार का समेकित ध्वनि-विस्तार उपकरण है जिसका प्रयोग व विकास सार्वजनिक कार्यक्रमों में स्पष्ट ध्वनि प्रसारण हेतु किया गया है।
- **बजाने का तरीका :** माइक्रोफोन से ध्वनि लेकर स्पीकर द्वारा प्रसारित की जाती है।
- **मुख्य भाग :** माइक्रोफोन, स्पीकर, एम्पलीफायर, मिक्सर, केबल।
- **प्रमुख उपयोग :** प्रार्थना सभा, सांस्कृतिक कार्यक्रम, मंच संचालन।
- **शैक्षिक महत्व :** मंचीय संप्रेषण एवं प्रस्तुति कौशल विकसित करता है।
- **रख-रखाव एवं सावधानियाँ :** तारों एवं विद्युत उपकरणों की नियमित जाँच करें।



प्रयोग करने की विधि

- साउंड सिस्टम को समतल एवं सुरक्षित स्थान पर रखें।
- माइक्रोफोन, स्पीकर तथा अन्य उपकरणों को ब्लूटूथ/केबल से जोड़ें।
- विद्युत आपूर्ति चालू कर वॉल्यूम एवं ध्वनि स्तर को आवश्यकतानुसार समायोजित करें।
- कार्यक्रम के अनुसार माइक्रोफोन एवं संगीत स्रोत का परीक्षण कर उपयोग करें।
- प्रयोग के बाद साउंड सिस्टम बंद करें, सभी केबल सुरक्षित रखें तथा उपकरणों को साफ करके सुरक्षित स्थान पर रखें।

प्लास्टिक झींका (करताल)

(बड़ा, 10 झंकारियों सहित)

- **वाद्य का प्रकार :** घन (ताल) वाद्य।
- **संक्षिप्त इतिहास :** लोक संगीत खास कर कीर्तन मंडली में प्रयोग होने वाला लोकप्रिय ताल वाद्य।
- **बजाने का तरीका :** दोनों हाथ से पकड़कर ताल एवं लय के अनुसार हिला-हिला कर बजाया जाता है।
- **मुख्य भाग :** प्लास्टिक फ्रेम, 10 झंकारियाँ।
- **प्रमुख उपयोग :** ताल अभ्यास, बालगीत, समूहगान।
- **शैक्षिक महत्व :** प्रारम्भिक लयबोध विकसित करता है।
- **रख-रखाव एवं सावधानियाँ :** झंकारियों को टूटने से बचाएँ।

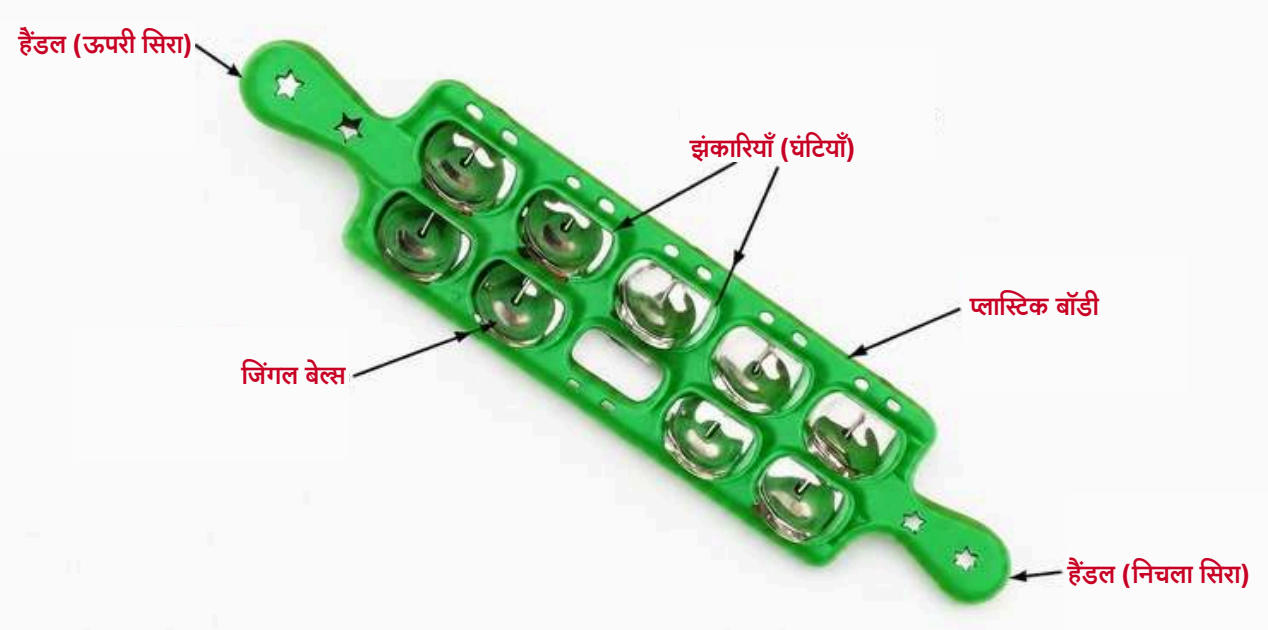

प्रयोग करने की विधि

- झींका (करताल) को आरामदायक पकड़ के साथ एक हाथ अथवा दोनों हाथों से मजबूती से पकड़ें।
- लय के अनुसार झींका (करताल) को धीरे-धीरे हिलाकर या झटककर ध्वनि उत्पन्न करें।
- गीत, भजन एवं समूहगान की ताल के साथ संतुलित गति में प्रयोग करें।
- अत्यधिक बल से न हिलाएँ तथा लय और ध्वनि की समानता बनाए रखें।
- प्रयोग के बाद झींका (करताल) को साफ करके सुरक्षित एवं सूखी जगह पर रखें।

प्लास्टिक छोटा झींका

(6 झंकारियों सहित)

- **वाद्य का प्रकार :** घन (ताल) वाद्य।
- **संक्षिप्त इतिहास :** लोक संगीत, खासकर कीर्तन मंडली में प्रयोग होने वाला लोकप्रिय ताल वाद्य।
- **बजाने का तरीका :** एक हाथ से पकड़कर लय के अनुसार दूसरे हाथ पर टकराया जाता है अथवा एक ही हाथ से लय के अनुसार हिला-हिला कर बजाया जाता है।
- **मुख्य भाग :** फ्रेम, 5 झंकारियाँ।
- **प्रमुख उपयोग :** खनक वाली ध्वनि एवं ताल अभ्यास।
- **शैक्षिक महत्व :** बालगीत में प्रयोग , हाथ–आँख समन्वय एवं लयबोध विकसित करता है।
- **रख-रखाव एवं सावधानियाँ :** सुरक्षित स्थान पर रखें।

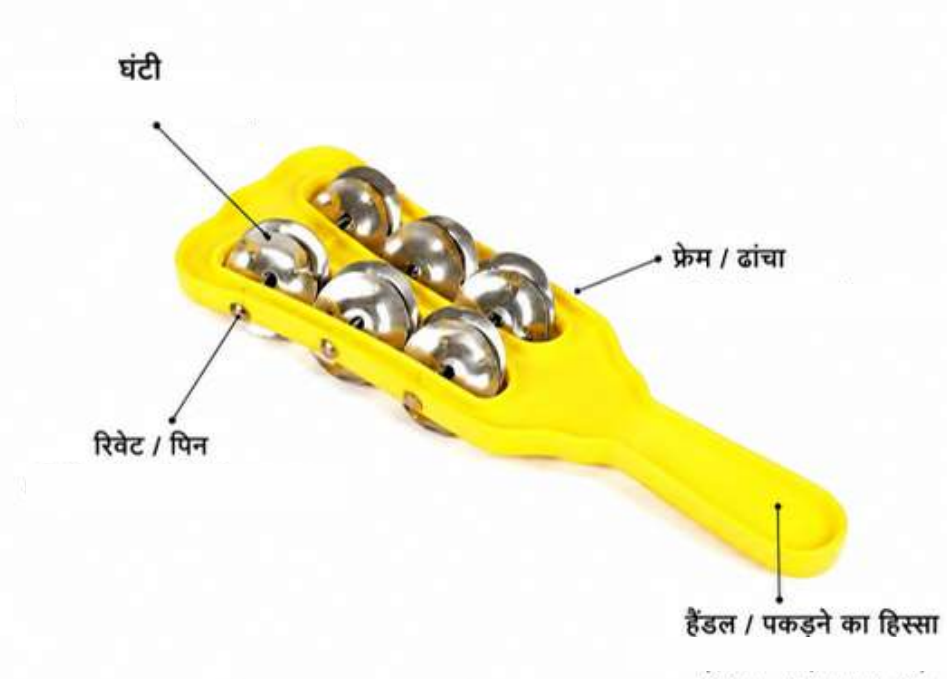

प्रयोग करने की विधि

- झींका को एक हाथ में आरामदायक एवं संतुलित पकड़ के साथ पकड़ें।
- लय के अनुसार हल्के हाथ से हिलाकर या झटककर ध्वनि उत्पन्न करें।
- गीत, भजन,बालगीत एवं समूहगान की ताल के साथ समन्वय बनाकर प्रयोग करें।
- अत्यधिक बल का प्रयोग न करें तथा समान लय बनाए रखें।
- प्रयोग के बाद झींका को साफ करके सुरक्षित एवं सूखी जगह पर रखें।

डफली
(टैम्बरीन)

- **वाद्य का प्रकार :** घन एवं अवनद्ध वाद्य।
- **संक्षिप्त इतिहास :** भारत सहित अनेक देशों में लोक एवं भक्ति संगीत का लोकप्रिय वाद्य।
- **बजाने का तरीका :** हथेली एवं उँगलियों से थपकी देकर।
- **मुख्य भाग :** फ्रेम, चमड़ा/प्लास्टिक, झंकारियाँ।
- **प्रमुख उपयोग :** भजन, कीर्तन, लोकगीत।
- **शैक्षिक महत्व :** सरल ताल अभ्यास के लिए उपयुक्त।
- **रख-रखाव एवं सावधानियाँ :** चमड़े को नमी से बचाएँ। प्लास्टिक/चमड़े को खरोंच लगने से बचाएं।



प्रयोग करने की विधि

- डफली को एक हाथ में मजबूती एवं संतुलित पकड़ के साथ पकड़ें।
- दूसरे हाथ की उँगलियों या हथेली से हल्के एवं नियंत्रित प्रहार करें।
- लय के अनुसार डफली को हल्का हिलाकर झंकारियों की ध्वनि उत्पन्न करें।
- गीत, भजन एवं समूहगान की ताल के साथ संतुलित लय में प्रयोग करें।
- प्रयोग के बाद डफली को साफ करके सुरक्षित एवं सूखी जगह पर रखें।

पीतल का मंजीरा

- **वाद्य का प्रकार :** घन वाद्य।
- **संक्षिप्त इतिहास :** प्राचीन काल से भक्ति एवं लोकसंगीत में प्रयुक्त। इसे कंसी के नाम से भी जाना जाता है।
- **बजाने का तरीका :** दोनों मंजीरों को आपस में टकराकर।
- **मुख्य भाग :** दो पीतल की कटोरियाँ, डोरी।
- **प्रमुख उपयोग :** भजन, कीर्तन, लोकसंगीत।
- **शैक्षिक महत्व :** ताल एवं लय विकसित करता है।
- **रख-रखाव एवं सावधानियाँ :** उपयोग के बाद सुरक्षित स्थान पर रखें।



प्रयोग करने की विधि

- मंजीरे को दोनों हाथों में आरामदायक एवं संतुलित पकड़ के साथ पकड़ें।
- दोनों मंजीरों को हल्के एवं नियंत्रित ढंग से आपस में टकराकर ध्वनि उत्पन्न करें।
- गीत, भजन एवं समूहगान की ताल के अनुसार लय बनाए रखते हुए बजाएँ।
- अत्यधिक बल से प्रहार न करें तथा ध्वनि की स्पष्टता एवं संतुलन बनाए रखें।
- प्रयोग के बाद मंजीरे को साफ करके सुरक्षित एवं सूखी जगह पर रखें।

बांसुरी

- **वाद्य का प्रकार :** सुषिर वाद्य।
- **संक्षिप्त इतिहास :** भारतीय संगीत परंपरा का अत्यंत प्राचीन वाद्य, जिसका उल्लेख प्राचीन ग्रंथों में मिलता है।
- **बजाने का तरीका :** फूँक मारकर तथा स्वर छिद्रों को उँगलियों से नियंत्रित करके।
- **मुख्य भाग :** बाँस, मुख छिद्र, स्वर छिद्र।
- **प्रमुख उपयोग :** शास्त्रीय, लोक एवं फिल्म संगीत।
- **शैक्षिक महत्व :** श्वास नियंत्रण एवं स्वर शुद्धता विकसित करती है।
- **रख-रखाव एवं सावधानियाँ :** सूखी एवं सुरक्षित जगह पर रखें।



प्रयोग करने की विधि

- बाँसुरी को दोनों हाथों से सही पकड़ में रखें तथा होंठों के बीच उचित स्थिति में रखें।
- फूँक को नियंत्रित रखते हुए माउथपीस पर समान रूप से वायु प्रवाहित करें।
- उँगलियों से स्वरों के छिद्रों को सही क्रम में खोलें एवं बंद करें।
- सरगम, अलंकार तथा सरल धुनों का नियमित अभ्यास करें और लय बनाए रखें।
- प्रयोग के बाद बाँसुरी को साफ करके उसके कवर में सुरक्षित एवं सूखी जगह पर रखें।

घुँघरू

(एक जोड़ी, प्रत्येक पट्टी में 25 घुँघरू)

- **वाद्य का प्रकार :** घन वाद्य।
- **संक्षिप्त इतिहास :** प्राचीन काल से शास्त्रीय एवं लोकनृत्य का अभिन्न अंग।
- **कैसे उपयोग किया जाता है:** टखनों के ऊपर बाँधकर लय और ताल के साथ नृत्य में प्रयोग किया जाता है।
- **मुख्य भाग :** कपड़े/रस्सी की पट्टी, पीतल के घुँघरू।
- **प्रमुख उपयोग :** कथक, भरतनाट्यम, अन्य शास्त्रीय नृत्य।
- **शैक्षिक महत्व :** ताल, लय एवं पद-संचालन का विकास।
- **रख-रखाव एवं सावधानियाँ :** उपयोग के बाद सूखे स्थान पर सुरक्षित रखें।

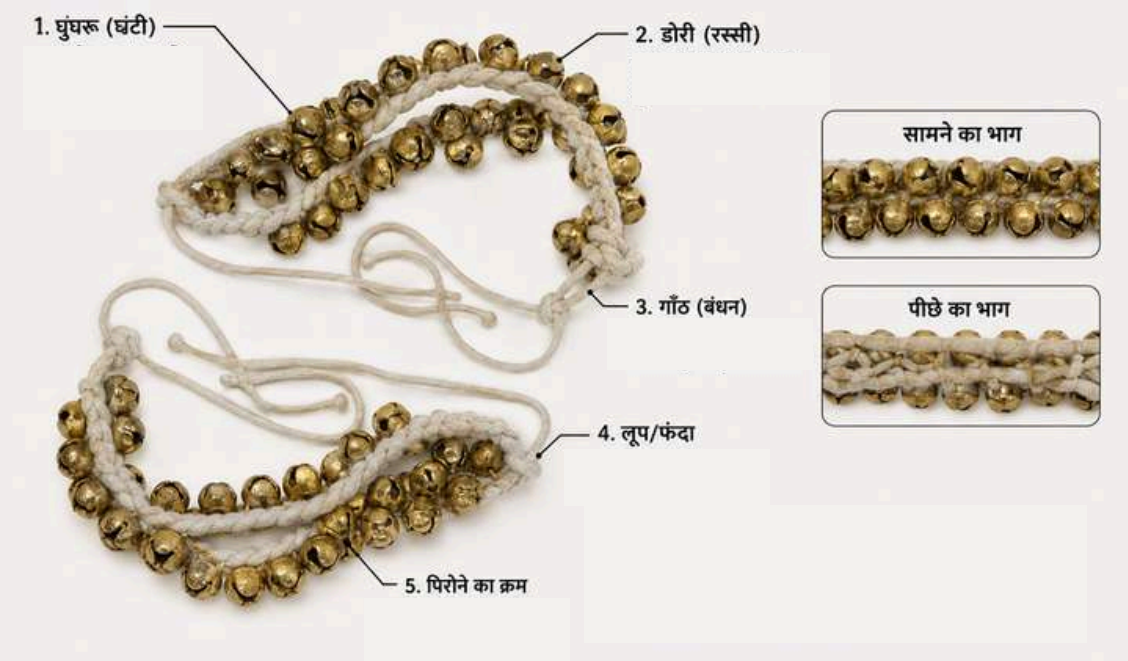

प्रयोग करने की विधि

- घुँघरू को दोनों पैरों में टखनों के ऊपर समान रूप से एवं मजबूती से बाँधें।
- सही मुद्रा में खड़े होकर पैरों की गति के साथ संतुलित अभ्यास प्रारम्भ करें।
- लय एवं ताल के अनुसार पद चालन (Footwork) का अभ्यास करें।
- नृत्य या संगीत अभ्यास के दौरान गति एवं संतुलन बनाए रखें।
- प्रयोग के बाद घुँघरू खोलकर साफ करें तथा सुरक्षित एवं सूखी जगह पर रखें।

बैंड का परिचय

1. पीतल का ट्रम्पेट (Brass Trumpet)

- **वाद्य का प्रकार :** सुषिर (ब्रास) वाद्य।
- **संक्षिप्त परिचय :** सैन्य बैंड, ऑर्केस्ट्रा एवं विद्यालयी बैंड का प्रमुख वाद्य है।
- **बजाने का तरीका :** माउथपीस में फूँक मारकर तथा वाल्व दबाकर।
- **मुख्य भाग :** माउथपीस, वाल्व, ट्यूनिंग स्लाइड, बेल।
- **प्रमुख उपयोग :** मार्चिंग बैंड, सैन्य बैंड, ऑर्केस्ट्रा।
- **शैक्षिक महत्व :** श्वास नियंत्रण एवं अनुशासन विकसित करता है।
- **रख-रखाव एवं सावधानियाँ :** वाल्व की नियमित सफाई एवं ऑयलिंग करें।

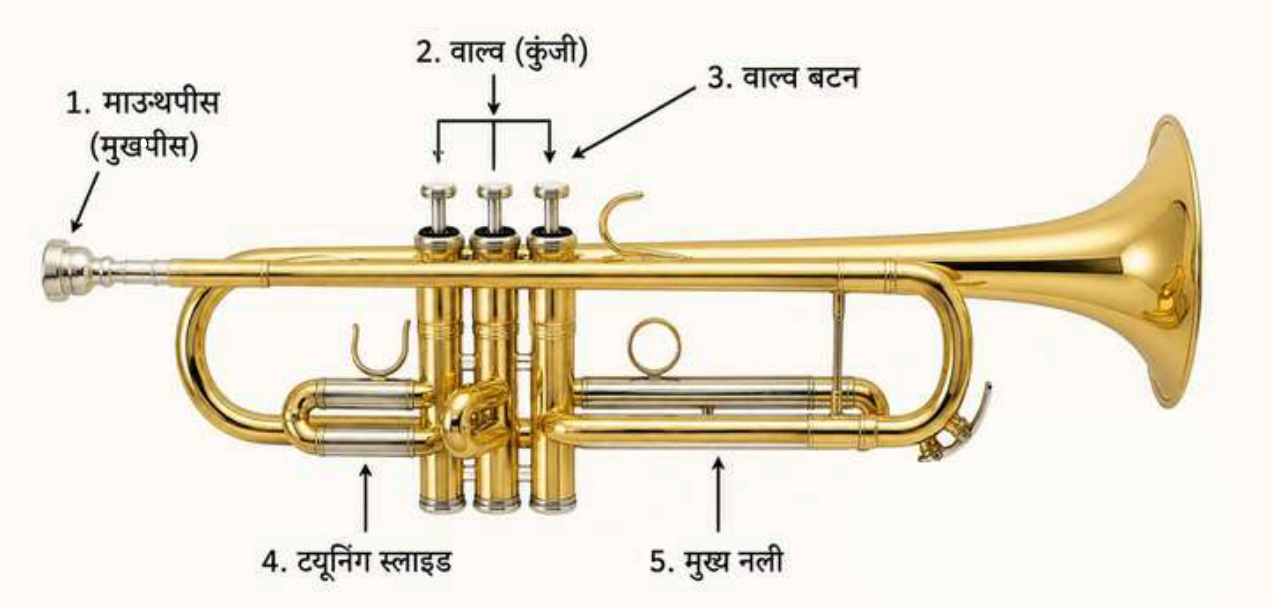

प्रयोग करने की विधि

- ट्रम्पेट को दोनों हाथों से सही ढंग से पकड़कर माउथपीस को होंठों पर हल्के से लगाएँ।
- गहरी साँस लेकर मुँह से नियंत्रित रूप से हवा प्रवाहित करें और होंठों में हल्का कंपन उत्पन्न करें।
- अलग-अलग स्वर निकालने के लिए उँगलियों से वाल्व को क्रमशः दबाएँ और छोड़ें।
- प्रारंभ में सरल स्वरों एवं छोटी धुनों का धीमी गति से अभ्यास करें और धीरे-धीरे वादन की गति बढ़ाएँ।
- वादन के बाद माउथपीस एवं ट्रम्पेट को साफ करके सूखी और सुरक्षित जगह पर रखें।

2. स्टेनलेस स्टील साइड ड्रम (स्टिक सहित)

- **वाद्य का प्रकार :** अवनद्ध (ताल) वाद्य।
- **संक्षिप्त परिचय :** सैन्य एवं मार्चिंग बैंड का प्रमुख ताल वाद्य।
- **बजाने का तरीका :** दो ड्रम स्टिक से झिल्ली पर प्रहार करके।
- **मुख्य भाग :** शेल, झिल्ली, रिम, टेंशन रॉड, स्टिक।
- **प्रमुख उपयोग :** मार्च पास्ट, परेड, विद्यालयी बैंड।
- **शैक्षिक महत्व :** ताल, अनुशासन एवं समन्वय विकसित करता है।
- **रख-रखाव एवं सावधानियाँ :** झिल्ली का कसाव नियमित जाँचें।



प्रयोग करने की विधि

- ड्रम को उसकी पट्टी की सहायता से कमर पर बाँधें या कंधे के सहारे सही स्थिति में लटकाएँ।
- दोनों हाथों में स्टिक्स को सहज और संतुलित ढंग से पकड़ें।
- ड्रम की ऊपरी झिल्ली पर स्टिक्स से हल्की और नियंत्रित चोट करके ध्वनि उत्पन्न करें।
- परेड, मार्चिंग या बैंड की निर्धारित ताल और लय के अनुसार ड्रम बजाएँ।
- प्रयोग के बाद ड्रम और स्टिक्स को साफ करके सूखे एवं सुरक्षित स्थान पर रखें।

3. स्टेनलेस स्टील बास ड्रम / पी.टी. ड्रम (बीटर सहित)

- **वाद्य का प्रकार :** अवनद्ध वाद्य।
- **संक्षिप्त परिचय :** मार्चिंग बैंड में मुख्य ताल बनाए रखने हेतु विकसित।
- **बजाने का तरीका :** बीटर (Mallet) से झिल्ली पर प्रहार करके।
- **मुख्य भाग :** शेल, झिल्ली, बीटर, स्ट्रैप।
- **प्रमुख उपयोग :** मार्चिंग बैंड, पी.टी., परेड।
- **शैक्षिक महत्व :** समूह लय एवं ताल नियंत्रण विकसित करता है।
- **रख-रखाव एवं सावधानियाँ :** झिल्ली को नमी से बचाएँ। स्नेयर के तारों का तनाव सही रखें। ड्रम हेड को धूप से बचाएं और स्टिक्स को संभालकर रखें।



प्रयोग करने की विधि

- ड्रम में लगे हार्नेस बेल्ट को कंधे के सहारे छाती के सामने सही स्थिति में टाँगें।
- गद्देदार बीटर को हाथ में आरामदायक और संतुलित ढंग से पकड़ें।
- ड्रम की झिल्ली के केंद्र या किनारे पर बीटर से नियंत्रित एवं लयबद्ध प्रहार करें।
- बैंड या मार्चिंग की निर्धारित गति और ताल के अनुसार ड्रम का वादन करें।
- प्रयोग के बाद ड्रम और बीटर को साफ करके सूखे एवं सुरक्षित स्थान पर रखें।

4. पी.टी. ड्रम स्टैंड

- **वाद्य का प्रकार :** वाद्य सहायक उपकरण।
- **संक्षिप्त परिचय :** ड्रम को स्थिर रखने हेतु विकसित स्टैंड।
- **बजाने का तरीका :** ड्रम को स्टैंड पर सुरक्षित स्थापित किया जाता है।
- **मुख्य भाग :** स्टैंड फ्रेम, ऊँचाई समायोजन, लॉक।
- **प्रमुख उपयोग :** अभ्यास एवं प्रस्तुति।
- **शैक्षिक महत्व :** सही वादन मुद्रा बनाए रखने में सहायक।
- **रख-रखाव एवं सावधानियाँ :** सभी लॉक एवं स्क्रू समय-समय पर कसें।

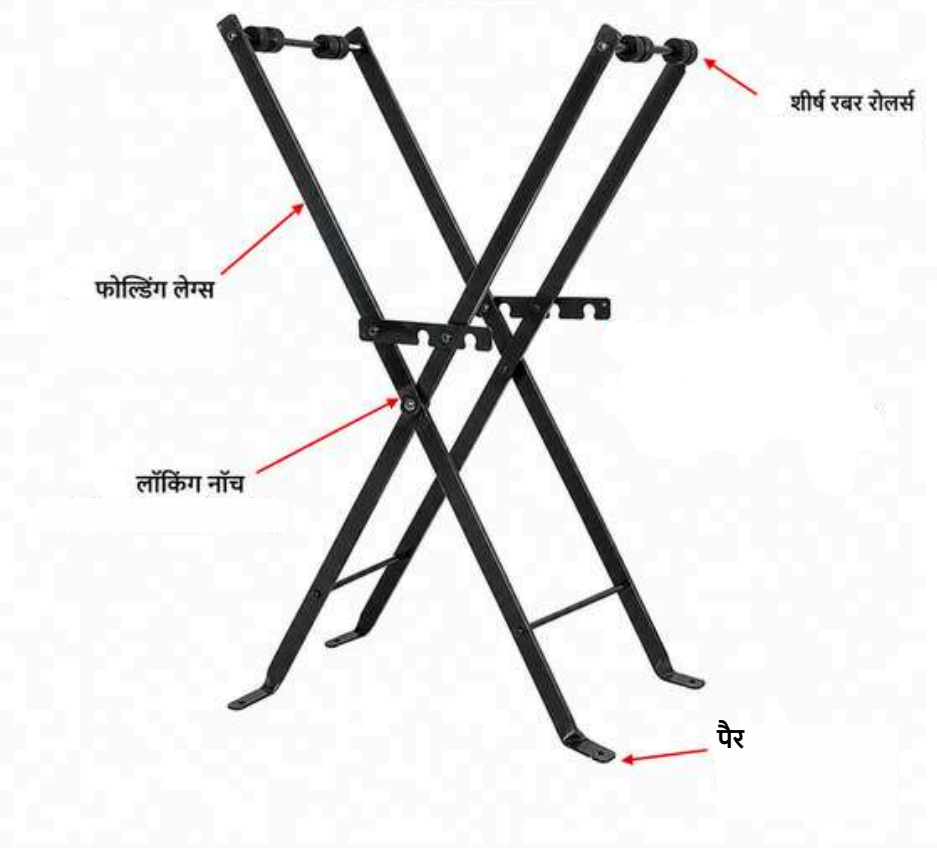

प्रयोग करने की विधि

- ड्रम स्टैंड को समतल एवं मजबूत स्थान पर रखें और उसके आधार पैरों को अच्छी तरह खोलकर स्थिर करें।
- ड्रम को स्टैंड पर सावधानीपूर्वक रखें और निर्धारित लॉक/क्लैंप से सुरक्षित रूप से कसें।
- ड्रम की ऊँचाई को वादक की सुविधा के अनुसार समायोजित करें, ताकि वादन सहजता से किया जा सके।
- वादन के दौरान स्टैंड को हिलने या खिसकने से बचाएँ और आवश्यकता पड़ने पर उसके लॉक की जाँच करें।
- उपयोग के बाद ड्रम हटाकर स्टैंड को साफ करें, मोड़कर सुरक्षित एवं सूखे स्थान पर रखें।

5. मेजर स्टिक / लीडिंग स्टिक

- **वाद्य का प्रकार :** बैंड संचालन उपकरण।
- **संक्षिप्त परिचय :** बैंड मास्टर द्वारा बैंड संचालन हेतु प्रयुक्त।
- **बजाने का तरीका :** हाथ में पकड़कर संकेत एवं ताल निर्देश दिए जाते हैं।
- **मुख्य भाग :** डंडा, शीर्ष सजावट, पकड़।
- **प्रमुख उपयोग :** मार्चिंग एवं बैंड संचालन।
- **शैक्षिक महत्व :** नेतृत्व एवं अनुशासन विकसित करता है।
- **रख-रखाव एवं सावधानियाँ :** सीधा एवं सुरक्षित रखें।



प्रयोग करने की विधि

- मेजर स्टिक को प्रमुख हाथ में संतुलित एवं सहज पकड़ें और शरीर की मुद्रा सीधी रखें।
- हाथ की गति से स्पष्ट संकेत देकर बैंड की ताल, लय और गति को नियंत्रित करें।
- मार्चिंग के दौरान निर्धारित संकेतों के अनुसार स्टिक को ऊपर-नीचे एवं आवश्यक दिशा में संचालित करें।
- पहले धीमी गति में मूल संकेतों का अभ्यास करें, फिर ताल और मार्चिंग की गति के साथ समन्वय स्थापित करें।
- प्रयोग के बाद स्टिक को साफ करके सुरक्षित एवं सूखे स्थान पर रखें।

6. पीतल का बिगुल

- **वाद्य का प्रकार :** सुषिर (ब्रास) वाद्य।
- **संक्षिप्त परिचय :** सेना में संकेत देने हेतु विकसित, आज बैंड का प्रमुख वाद्य।
- **बजाने का तरीका :** माउथपीस में फूँक मारकर।
- **मुख्य भाग :** माउथपीस, ट्यूब, बेल।
- **प्रमुख उपयोग :** परेड, सैन्य एवं विद्यालयी बैंड।
- **शैक्षिक महत्व :** श्वास नियंत्रण एवं ध्वनि नियंत्रण विकसित करता है।
- **रख-रखाव एवं सावधानियाँ :** उपयोग के बाद सूखे कपड़े से साफ करें।



प्रयोग करने की विधि

- बिगुल को दोनों हाथों से सही ढंग से पकड़कर माउथपीस को होंठों पर हल्के से लगाएँ।
- गहरी साँस लेकर नियंत्रित रूप से हवा प्रवाहित करें और होंठों में कंपन उत्पन्न करके ध्वनि निकालें।
- होंठों के कंपन और वायु के दबाव को नियंत्रित करके विभिन्न स्वर एवं संकेत ध्वनियाँ उत्पन्न करें।
- प्रारंभ में सरल बिगुल संकेतों का अभ्यास करें तथा मार्चिंग बैंड की ताल और संकेतों के साथ समन्वय बनाएँ।
- वादन के बाद माउथपीस एवं बिगुल को साफ करके सूखे और सुरक्षित स्थान पर रखें।

7. पीतल का कॉर्नेट

- **वाद्य का प्रकार :** सुषिर (ब्रास) वाद्य।
- **संक्षिप्त परिचय :** ट्रम्पेट का छोटा एवं मधुर स्वर वाला रूप।
- **बजाने का तरीका :** माउथपीस में फूँक मारकर एवं वाल्व दबाकर।
- **मुख्य भाग :** माउथपीस, वाल्व, बेल।
- **प्रमुख उपयोग :** बैंड एवं ऑर्केस्ट्रा।
- **शैक्षिक महत्व :** स्वर नियंत्रण एवं श्वास क्षमता विकसित करता है।
- **रख-रखाव एवं सावधानियाँ :** वाल्व में नियमित ऑयल लगाएँ।

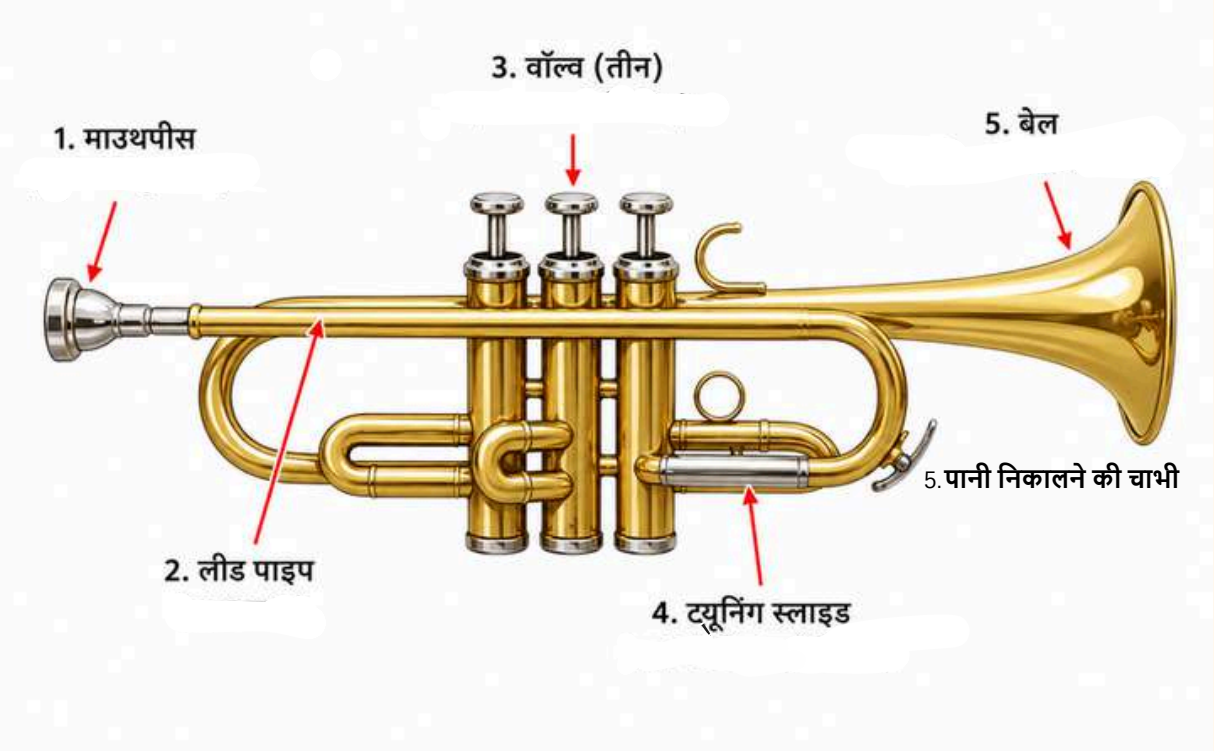

प्रयोग करने की विधि

- कॉर्नेट को दोनों हाथों से सही ढंग से पकड़कर माउथपीस को होंठों पर हल्के से लगाएँ।
- गहरी साँस लेकर नियंत्रित रूप से हवा प्रवाहित करें और होंठों में कंपन उत्पन्न करके ध्वनि निकालें।
- अलग-अलग स्वर उत्पन्न करने के लिए उँगलियों से वाल्व को क्रमशः दबाएँ और छोड़ें।
- प्रारंभ में सरल स्वरों एवं धुनों का अभ्यास करें और धीरे-धीरे ताल, लय तथा वादन की गति बढ़ाएँ।
- वादन के बाद माउथपीस एवं कॉर्नेट को साफ करके सूखे और सुरक्षित स्थान पर रखें।

8. स्टील की बांसुरी (Flute)

- **वाद्य का प्रकार :** सुषिर वाद्य।
- **संक्षिप्त परिचय :** आधुनिक बैंड का प्रमुख वाद्य।
- **बजाने का तरीका :** फूँक मारकर एवं की/छिद्र नियंत्रित करके।
- **मुख्य भाग :** हेड जॉइंट, बॉडी, फुट जॉइंट, की।
- **प्रमुख उपयोग :** विद्यालयी बैंड एवं ऑर्केस्ट्रा।
- **शैक्षिक महत्व :** श्वास एवं स्वर नियंत्रण विकसित करती है।
- **रख-रखाव एवं सावधानियाँ :** उपयोग के बाद अंदर की नमी साफ करें।



प्रयोग करने की विधि

- बाँसुरी को दोनों हाथों से सही ढंग से पकड़ें।
- गहरी साँस लेकर फूँकने वाले छिद्र पर नियंत्रित एवं हल्की हवा प्रवाहित करें।
- उँगलियों से निर्धारित छिद्रों को खोलकर और बंद करके अलग-अलग स्वर उत्पन्न करें।
- प्रारंभ में सरल स्वरों और छोटी धुनों का अभ्यास करें तथा धीरे-धीरे लय एवं गति में सुधार करें।
- वादन के बाद बाँसुरी को साफ और सूखा करके सुरक्षित स्थान पर रखें।

9. छोटी/बड़ी मराकास

- **वाद्य का प्रकार :** घन (ताल) वाद्य।
- **संक्षिप्त परिचय :** लोक एवं समूह संगीत में प्रयुक्त ताल वाद्य।
- **बजाने का तरीका :** हाथ में पकड़कर हिलाया जाता है।
- **मुख्य भाग :** खोखला सिर एवं हैंडल।
- **प्रमुख उपयोग :** ताल अभ्यास एवं समूहगान।
- **शैक्षिक महत्व :** लयबोध एवं समन्वय विकसित करता है।
- **रख-रखाव एवं सावधानियाँ :** गिरने से बचाएँ तथा सुरक्षित स्थान पर रखें।



प्रयोग करने की विधि

- मराकास को एक या दोनों हाथों से उसके हैंडल को मजबूती और सहजता से पकड़ें।
- हाथ को हल्के एवं नियंत्रित ढंग से आगे-पीछे हिलाकर तालबद्ध ध्वनि उत्पन्न करें।
- गीत या संगीत की निर्धारित ताल एवं लय के अनुसार मराकास को हिलाएँ।
- प्रारंभ में धीमी गति से सरल ताल का अभ्यास करें और धीरे-धीरे गति एवं ताल में विविधता लाएँ।
- प्रयोग के बाद मराकास को साफ करके सूखे एवं सुरक्षित स्थान पर रखें।

10. प्लास्टिक झीका / करताल (10 झंकारियों सहित)

- **वाद्य का प्रकार :** घन (ताल) वाद्य।
- **संक्षिप्त परिचय :** लोक संगीत परंपरा में लोकप्रिय।
- **बजाने का तरीका :** दोनों हाथों से पकड़कर हिलाया या थपथपाया जाता है।
- **मुख्य भाग :** प्लास्टिक फ्रेम, 10 झंकारियाँ।
- **प्रमुख उपयोग :** करतल ध्वनि एवं ताल अभ्यास ।
- **शैक्षिक महत्व :** प्रारम्भिक तालबोध विकसित करता है।
- **रख-रखाव एवं सावधानियाँ :** झंकारियों की नियमित जाँच करें।

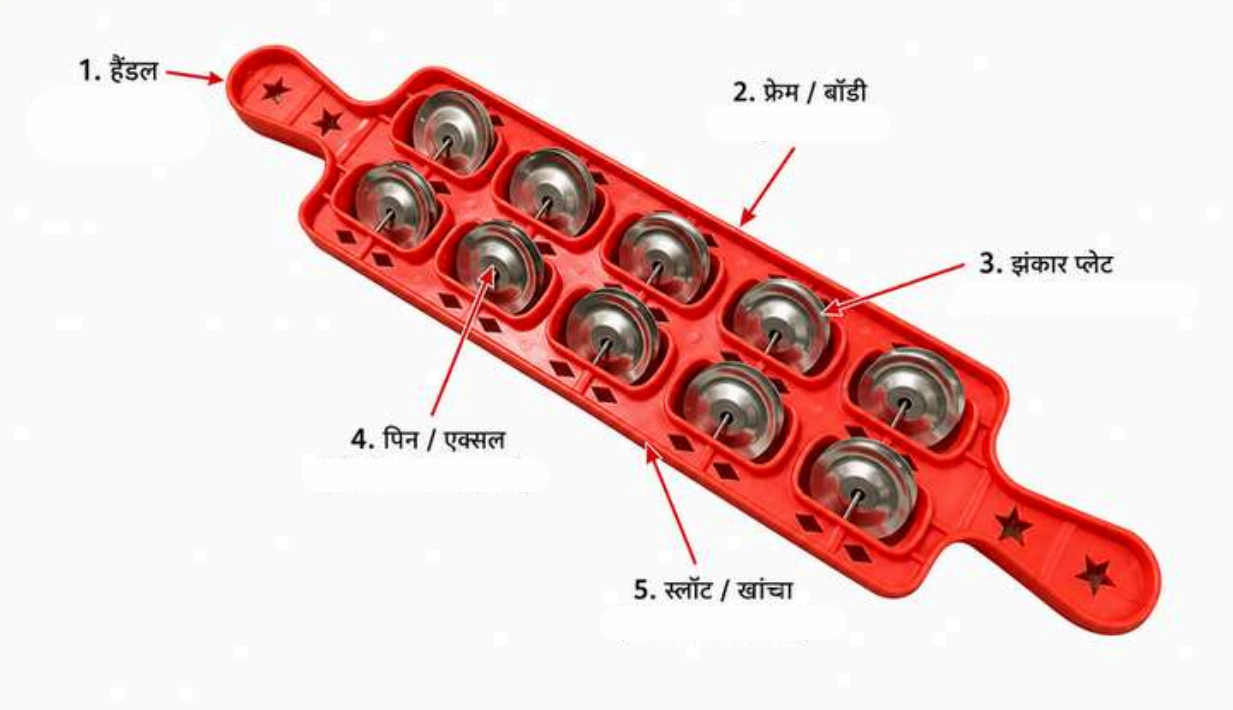

प्रयोग करने की विधि

- झीका/करताल को दोनों हाथों से उसके हैंडल या निर्धारित पकड़ वाले भाग से सुरक्षित एवं सहजता से पकड़ें।
- हाथों को नियंत्रित गति से हिलाकर झंकारियों से तालबद्ध ध्वनि उत्पन्न करें।
- बैंड के अनुसार ताल और लय के अनुसार झीका/करताल का वादन करें।
- प्रारंभ में सरल ताल का अभ्यास करें और धीरे-धीरे गति तथा ताल में विविधता लाएँ।
- प्रयोग के बाद झीका/करताल को साफ करके सूखे एवं सुरक्षित स्थान पर रखें।

11. 8 इंच एवं 10 इंच स्टेनलेस स्टील झांझ

- **वाद्य का प्रकार :** घन वाद्य।
- **संक्षिप्त परिचय :** सैन्य एवं ऑर्केस्ट्रा संगीत का महत्वपूर्ण ताल वाद्य।
- **बजाने का तरीका :** दोनों झांझों को नियंत्रित बल से टकराकर।
- **मुख्य भाग :** धातु डिस्क, पकड़ पट्टी।
- **प्रमुख उपयोग :** मार्चिंग बैंड एवं ऑर्केस्ट्रा।
- **शैक्षिक महत्व :** ताल एवं समयबोध विकसित करता है।
- **रख-रखाव एवं सावधानियाँ :** सूखे कपड़े से साफ करें ।



प्रयोग करने की विधि

- झांझ को दोनों हाथों से उसके पकड़ने वाले हिस्से से मजबूती और सहजता से पकड़ें।
- दोनों झांझों को हल्के और नियंत्रित ढंग से आपस में स्पर्श कराकर स्पष्ट ध्वनि उत्पन्न करें।
- गीत, भजन, बैंड या समूह वादन की निर्धारित ताल एवं लय के अनुसार झांझ बजाएँ।
- प्रारंभ में धीमी गति से सरल ताल का अभ्यास करें और धीरे-धीरे प्रहार की गति एवं लय में विविधता लाएँ।
- प्रयोग के बाद झांझ को साफ कपड़े से पोंछकर सूखे एवं सुरक्षित स्थान पर रखें।

12. बैंड यूनिफॉर्म (मोज़े, टोपी एवं जूते सहित)

- **प्रकार :** बैंड परिधान (Band Uniform)
- **संक्षिप्त परिचय :** बैंड यूनिफॉर्म में पोशाक, मोज़े, टोपी एवं जूते सम्मिलित होते हैं। यह बैंड की एकरूपता, अनुशासन, गरिमा एवं पेशेवर पहचान का प्रतीक है तथा प्रस्तुति को आकर्षक एवं प्रभावशाली बनाता है।
- **उपयोग :** मार्चिंग, परेड एवं सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के दौरान सभी सदस्य निर्धारित ड्रेस कोड के अनुसार यूनिफॉर्म, टोपी, मोज़े एवं जूते धारण करते हैं।
- **मुख्य भाग :** बैंड यूनिफॉर्म (शर्ट/कोट एवं पैंट), मोज़े, टोपी,जूते।
- **प्रमुख उपयोग :** मार्चिंग बैंड, परेड, पी.टी., राष्ट्रीय पर्व, विद्यालयी समारोह एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम।
- **शैक्षिक महत्व :** विद्यार्थियों में अनुशासन, समयपालन, समानता, टीम भावना, आत्मविश्वास तथा विद्यालय के प्रति गौरव की भावना का विकास करता है।
- **रख-रखाव एवं सावधानियाँ :** यूनिफॉर्म को नियमित रूप से साफ एवं इस्त्री करके रखें, जूतों की सफाई एवं पॉलिश करें, टोपी को सुरक्षित स्थान पर रखें तथा सभी परिधानों का उपयोग निर्धारित ड्रेस कोड के अनुसार करें।



रखरखाव संबंधित सामान्य निर्देश

सभी तरह के वाद्य यंत्रों और उपकरणों के उपयोग के साथ- साथ उनका सही रखरखाव भी अत्यंत जरुरी है ऐसे में उनके रखरखाव के आसान व असरदार तरीके जिससे लम्बे समय तक हम वाद्ययंत्रों को सुरक्षित रख सकते हैं :

हारमोनियम

- उपयोग के बाद हारमोनियम को हमेशा उसके कवर में सुरक्षित रखें। यदि कवर उपलब्ध न हो, तो उसे साफ़ एवं सूती कपड़े से अच्छी तरह ढककर रखें ताकि धूल और नमी से सुरक्षा बनी रहे।
- हारमोनियम लकड़ी से निर्मित होता है, इसलिए इसे सीलन, अत्यधिक नमी तथा सीधी धूप से दूर रखें। इससे इसकी लकड़ी, रीड और चाबियाँ सुरक्षित रहती हैं तथा वाद्य की गुणवत्ता लंबे समय तक बनी रहती है।
- वादन के समय धौंकनी को धीरे-धीरे और संतुलित गति से चलाएँ। इसे तेज़ी से या झटके के साथ खींचने से वायु-दाब असंतुलित हो सकता है तथा वाद्य के आंतरिक भागों पर अनावश्यक दबाव पड़ता है।
- वादन समाप्त होने के बाद धौंकनी में बची हुई हवा पूरी तरह निकालकर ही हारमोनियम को बंद करें। इससे धौंकनी पर अनावश्यक दबाव नहीं पड़ता।
- हारमोनियम को समतल एवं सुरक्षित स्थान पर रखें। उसे गिरने, टकराने या भारी वस्तुओं के नीचे रखने से बचाएँ।
- समय-समय पर हारमोनियम की सफाई करें तथा आवश्यकता पड़ने पर किसी प्रशिक्षित तकनीशियन से इसकी ट्यूनिंग एवं सर्विस अवश्य कराएँ।

तबला सेट

- तबले की काली स्याही (गाब) पर हाथ का अत्यधिक पसीना न लगने दें। वादन से पूर्व हाथ साफ़ एवं सूखा रखें ताकि स्याही की गुणवत्ता और ध्वनि लंबे समय तक सुरक्षित रहें।
- वादन समाप्त होने के बाद तबले एवं बाएँ को मुलायम, सूखे कपड़े से अच्छी तरह साफ़ करें तथा उन्हें सदैव गद्देदार कवर या पैड से ढककर सुरक्षित रखें, जिससे धूल, नमी और क्षति से बचाव हो सके।
- यदि लंबे समय तक तबले का उपयोग नहीं करना हो, तो गट्टों को थोड़ा ऊपर करके बद्धियों (पट्टियों) का खिंचाव हल्का ढीला कर दें। इससे चमड़े पर अनावश्यक तनाव नहीं पड़ता और उसके फटने की संभावना कम हो जाती है।
- तबले तथा बाएँ को हमेशा उनकी गोल गद्देदार रिंग पर ही रखें। इससे उनका संतुलन बना रहता है तथा पूड़ी और किनारों को क्षति पहुँचने से बचाया जा सकता है।
- तबले को सीधी धूप, अत्यधिक नमी तथा सीलन वाले स्थानों से दूर रखें, क्योंकि इससे चमड़ा, स्याही तथा लकड़ी की गुणवत्ता प्रभावित हो सकती है।
- समय-समय पर तबले की बद्धियों, गट्टों तथा ट्यूनिंग की जाँच कर आवश्यकतानुसार किसी अनुभवी कारीगर से उसका रख-रखाव एवं सुर मिलवाएँ।

ढोलक/नाल

- ढोलक/नाल को कभी भी गीले कपड़े से साफ़ न करें।
- सफाई के लिए हमेशा मुलायम एवं सूखे कपड़े का ही प्रयोग करें।
- यह लकड़ी एवं चमड़े से निर्मित वाद्य है, इसलिए इसे सीलन, अत्यधिक नमी तथा पानी से दूर रखें। इससे लकड़ी के सड़ने तथा चमड़े के ढीले होने की संभावना कम रहती है।
- वादन के बाद इसे गद्देदार कवर में रखकर सुरक्षित स्थान पर रखें, ताकि धूल, नमी एवं आकस्मिक क्षति से बचाव हो सके।
- लंबे समय तक उपयोग न होने की स्थिति में इसे सूखे एवं हवादार स्थान पर रखें तथा समय-समय पर इसकी रस्सियों, बोल्टों एवं चमड़े की जाँच करते रहें।

कीबोर्ड

- उपयोग के तुरंत बाद कीबोर्ड पर डस्ट कवर अवश्य लगाएँ ताकि चाबियों (Keys) के बीच धूल न जाए और सभी बटन सुचारु रूप से कार्य करते रहें।
- एडॉप्टर, पावर केबल तथा अन्य तारों को अधिक मोड़ने या खींचने से बचें। उन्हें हल्के से गोल लपेटकर सुरक्षित रखें।
- कीबोर्ड के पास पानी, चाय, कॉफी अथवा किसी भी प्रकार का तरल पदार्थ न रखें, क्योंकि इससे इलेक्ट्रॉनिक भाग क्षतिग्रस्त हो सकते हैं।
- कीबोर्ड को धूल, अत्यधिक गर्मी, सीधी धूप एवं नमी से दूर समतल स्थान पर रखें।
- उपयोग के बाद पावर बंद कर एडॉप्टर निकाल दें तथा परिवहन के समय गद्देदार बैग या केस का उपयोग करें।

साउंड सिस्टम (स्पीकर एवं माइक्रोफोन)

- माइक्रोफोन को कभी भी हाथ से नहीं थपथपाएँ तथा उसे गिरने या टकराने से बचाएँ। उपयोग के बाद उसे फोम कवर या उसके बॉक्स में सुरक्षित रखें।
- सिस्टम को चालू (On) या बंद (Off) करते समय वॉल्यूम हमेशा शून्य (Zero) पर रखें ताकि स्पीकर पर अचानक ध्वनि का झटका न पड़े।
- सभी केबलों को मोड़कर या दबाकर न रखें। उन्हें गोल लपेटकर व्यवस्थित ढंग से सुरक्षित रखें।
- स्पीकर एवं एम्पलीफायर को पानी, धूल, सीधी धूप तथा अत्यधिक गर्मी से दूर रखें।
- उपयोग समाप्त होने पर सभी कनेक्शन सावधानीपूर्वक हटाएँ तथा उपकरणों को उनके कवर या केस में सुरक्षित रखें।

वर्जिन प्लास्टिक झीका (बड़ा, 10 झंकार/जिंगल)

- उपयोग के बाद झीका को सूखे एवं मुलायम कपड़े से साफ़ करें ताकि धूल और गंदगी जमा न हो।
- प्लास्टिक बॉडी को आवश्यकता पड़ने पर हल्के नम कपड़े से साफ़ किया जा सकता है, लेकिन धातु की झंकारियों (जिंगल्स) पर पानी न रहने दें।
- झीका को अत्यधिक गर्मी, सीधी धूप तथा नमी से दूर रखें, जिससे प्लास्टिक और धातु दोनों सुरक्षित रहें।
- उपयोग के बाद इसे कवर या सुरक्षित बॉक्स में रखें, ताकि झंकारियाँ मुड़ें या क्षतिग्रस्त न हों।

डफली (टैम्बोरिन)

- वादन के बाद डफली को मुलायम एवं सूखे कपड़े से साफ़ करें।
- यदि डफली में चमड़े की झिल्ली हो, तो उसे पानी एवं अत्यधिक नमी से बचाकर रखें।
- धातु की झंकारियों को सूखा रखें ताकि उनमें जंग न लगे।
- डफली को गिरने, दबने या भारी वस्तुओं के नीचे रखने से बचाएँ तथा उपयोग के बाद कवर में सुरक्षित रखें।

वर्जिन प्लास्टिक झीका (छोटा, 5 झंकार/जिंगल)

- उपयोग के बाद झीका को सूखे कपड़े से साफ़ कर सुरक्षित स्थान पर रखें।
- प्लास्टिक भाग को आवश्यकता पड़ने पर हल्के नम कपड़े से साफ़ करें परंतु धातु की झंकारियों को हमेशा सूखा रखें।
- इसे सीधी धूप, अत्यधिक गर्मी तथा नमी से दूर रखें।
- परिवहन के समय इसे कवर या सुरक्षित डिब्बे में रखें ताकि इसकी झंकारियाँ सुरक्षित रहें।

पीतल की मंजीरा

- उपयोग के बाद मंजीरे को मुलायम सूखे कपड़े से साफ़ करें जिससे पसीना, धूल एवं नमी हट जाए।
- पीतल की चमक बनाए रखने के लिए समय-समय पर उपयुक्त धातु क्लीनर या नींबू-राख/पीतल साफ़ करने वाले सुरक्षित पदार्थ का सीमित उपयोग किया जा सकता है।
- मंजीरे को नमी एवं पानी से बचाकर रखें, ताकि धातु पर जंग या दाग न पड़ें।
- उपयोग के बाद दोनों मंजीरों को कपड़े के थैले या कवर में सुरक्षित रखें, जिससे उन पर खरोंच न आए।

बाँसुरी

- वादन के बाद बाँसुरी के अंदर की नमी को मुलायम सूती कपड़े या सफाई रॉड की सहायता से निकाल दें।
- बाँसुरी को अत्यधिक धूप, गर्मी तथा नमी से दूर रखें, जिससे उसमें दरार या टेढ़ापन न आए।
- उँगलियों के छिद्रों तथा फूँकने वाले भाग को साफ़ रखें और उनमें धूल या गंदगी जमा न होने दें।
- उपयोग के बाद बाँसुरी को उसके कवर या केस में सुरक्षित रखें तथा उस पर भारी वस्तुएँ न रखें।

घुँघरू (एक जोड़ी, प्रत्येक में 25 घुँघरू)

- उपयोग के बाद घुँघरुओं को सूखे कपड़े से साफ़ करें ताकि पसीना एवं धूल हट जाए।
- कपड़े या चमड़े की पट्टी को पूरी तरह सूखा रखें तथा गीला होने पर छाया में सुखाएँ।
- घुँघरुओं की डोरी या पट्टी की समय-समय पर जाँच करें और ढीली होने पर उसे ठीक करा लें।
- घुँघरुओं को सूखी जगह पर कवर या थैले में रखें, जिससे उनमें जंग न लगे और उनकी ध्वनि की गुणवत्ता बनी रहे।

सभी वाद्य-यंत्रों के लिए सामान्य

क्या करें



- वादन से पहले हाथों को साफ़ और सूखा रखें।
- उपयोग करने के बाद वाद्ययंत्र को साफ़ करके उसके कवर या केस में सुरक्षित रखें।
- वाद्ययंत्रों को धूल, नमी, वर्षा एवं सीधी धूप से बचाकर रखें।
- समय-समय पर वाद्ययंत्रों की सफाई, ट्यूनिंग एवं आवश्यक सर्विस कराएँ।
- वाद्ययंत्रों को निर्धारित स्थान पर सावधानीपूर्वक रखें।
- परिवहन के समय गद्देदार बैग या कवर का उपयोग करें।
- प्रत्येक वाद्ययंत्र का प्रयोग सही तकनीक एवं उचित पकड़ के साथ करें।
- उपयोग करने के बाद सभी इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की बिजली कनेक्शन बंद करें।
- विद्यार्थियों को वाद्ययंत्रों का सुरक्षित एवं जिम्मेदारीपूर्ण उपयोग करना सिखाएँ।

क्या न करें



- वाद्ययंत्रों को फेंकें, घसीटें या आपस में टकराने न दें।
- गीले हाथों से किसी भी वाद्ययंत्र का उपयोग न करें।
- वाद्ययंत्रों पर अनावश्यक दबाव या अत्यधिक बल का प्रयोग न करें।
- इलेक्ट्रॉनिक वाद्ययंत्रों के पास पानी या अन्य तरल पदार्थ न रखें।
- वाद्ययंत्रों को बिना कवर के लंबे समय तक खुला न छोड़ें।
- अत्यधिक गर्मी, सीधी धूप या सीलन वाले स्थान पर न रखें।
- प्रशिक्षित व्यक्ति के बिना वाद्ययंत्र खोलने या मरम्मत करने का प्रयास न करें।
- केबल, तार या पट्टियों को खींचकर न निकालें।
- उपयोग के बाद वाद्ययंत्रों को इधर-उधर बिखरा हुआ न छोड़ें।

मार्चिंग बैंड वाद्ययंत्रों के लिए

(बास ड्रम, साइड ड्रम, स्नेयर ड्रम, टेनर ड्रम, ट्रायंगल, लाइरा/बेल लाइरा, ब्यूगल, ट्रम्पेट, क्लैरिनेट, सैक्सोफोन, फ्लूट, मार्चिंग बेल्स आदि)

क्या करें



- वादन से पहले सभी पट्टियाँ, बेल्ट एवं लॉक अच्छी तरह जाँच लें।
- वादन के बाद सभी वाद्ययंत्रों को साफ़ कर केस में रखें।
- धातु वाद्ययंत्रों को नियमित रूप से पॉलिश करें।
- ड्रम की स्किन एवं ट्यूनिंग की समय-समय पर जाँच करें।
- प्रत्येक अभ्यास से पहले वाद्ययंत्र की फिटिंग एवं स्क्रू जाँच लें।
- वर्षा के दौरान वाद्ययंत्रों को वाटरप्रूफ कवर से सुरक्षित रखें।
- बैंड अभ्यास के बाद सभी उपकरणों की गिनती एवं सुरक्षित भंडारण सुनिश्चित करें।

क्या न करें



- वाद्ययंत्र को एक हाथ से लटकाकर न चलें।
- मार्च करते समय वाद्ययंत्र को झटका न दें।
- ड्रम स्टिक या मैलेट से आवश्यकता से अधिक बल न लगाएँ।
- धातु वाद्ययंत्रों को बिना साफ़ किए केस में न रखें।
- वाद्ययंत्रों को जमीन पर सीधे न रखें; स्टैंड या गद्देदार सतह का उपयोग करें।
- हार्नेस या बेल्ट को ढीला छोड़कर मार्च न करें।
- अभ्यास के दौरान बिना निर्देश के तेज़ ध्वनि में वादन न करें।
- वाद्ययंत्रों को वर्षा या कीचड़ में खुला न छोड़ें।
- किसी दूसरे विद्यार्थी का वाद्ययंत्र बिना अनुमति उपयोग न करें।

बैंड मार्चिंग उपकरण (Band Marching Accessories) के लिए

(हार्नेस, बेल्ट, स्लिंग, ड्रम स्टिक, मैलेट, म्यूजिक लायर, स्टैंड आदि)

क्या करें

- उपयोग से पहले सभी बेल्ट, बकल एवं हार्नेस की मजबूती जाँचें।
- ड्रम स्टिक एवं मैलेट को सूखी जगह पर रखें।
- उपयोग के बाद सभी एक्सेसरीज़ को व्यवस्थित रूप से संग्रहित करें।
- टूटे हुए हार्नेस, बेल्ट या स्टिक को तुरंत बदलें।
- मार्चिंग के दौरान सभी फिटिंग्स को सुरक्षित रूप से बाँधें।



क्या न करें

- क्षतिग्रस्त हार्नेस या बेल्ट का उपयोग न करें।
- ड्रम स्टिक को फेंकें या मोड़ें नहीं।
- हार्नेस को अत्यधिक भार उठाने के लिए प्रयोग न करें।
- स्टैंड पर आवश्यकता से अधिक भार न रखें।
- एक्सेसरीज़ को धूप, नमी या वर्षा में खुला न छोड़ें।





प्रधानाध्यापक के लिए सुझाव

विद्यालय में उपलब्ध कराए गए वाद्ययंत्रों का सुरक्षित, नियमित एवं शैक्षिक उपयोग सुनिश्चित करने के लिए प्रधानाध्यापक द्वारा निम्नलिखित व्यवस्थाएँ की जानी चाहिए:

1. वाद्ययंत्रों का सुरक्षित भंडारण सुनिश्चित करें। सभी वाद्ययंत्रों को निर्धारित, स्वच्छ, सूखे एवं सुरक्षित स्थान पर रखा जाए तथा यथासंभव उनके कवर या केस का उपयोग किया जाए।
2. वाद्ययंत्रों की सूची एवं अभिलेख संधारित करें। विद्यालय में उपलब्ध प्रत्येक वाद्ययंत्र एवं उसके सहायक उपकरणों की सूची तैयार कर समय-समय पर उनकी उपलब्धता एवं स्थिति की जाँच की जाए।
3. वाद्ययंत्रों के लिए उत्तरदायित्व निर्धारित करें। संगीत शिक्षक के समन्वय से वाद्ययंत्रों के उपयोग, रख-रखाव, सुरक्षित भंडारण एवं उपलब्धता की निगरानी की व्यवस्था की जाए।
4. नियमित उपयोग को प्रोत्साहित करें। वाद्ययंत्रों को केवल सांस्कृतिक कार्यक्रमों या मंचीय प्रस्तुतियों तक सीमित न रखते हुए संगीत की कक्षा में स्वर, लय, ताल, गति, ध्वनि एवं विराम जैसी अवधारणाओं को समझाने के लिए नियमित रूप से प्रयोग किया जाए।
5. विद्यार्थियों की सक्रिय सहभागिता सुनिश्चित करें। विद्यार्थियों को वाद्ययंत्रों को देखने, सुनने, स्पर्श करने तथा स्वयं बजाने का अवसर दिया जाए। व्यक्तिगत एवं सामूहिक वादन के माध्यम से सहयोग, सहभागिता, नेतृत्व, उत्तरदायित्व एवं टीम भावना को विकसित किया जाए।
6. विद्यालयी गतिविधियों में वाद्ययंत्रों का सार्थक उपयोग करें। प्रार्थना सभा, बालसभा, सांस्कृतिक कार्यक्रम, कला उत्सव, समूहगान तथा अन्य सह-शैक्षिक गतिविधियों में उपलब्ध वाद्ययंत्रों का उद्देश्यपूर्ण एवं सुरक्षित उपयोग सुनिश्चित किया जाए। मार्गदर्शिका में भी इन गतिविधियों में वाद्ययंत्रों के प्रभावी उपयोग पर बल दिया गया है।
7. सुरक्षा संबंधी निर्देशों का पालन सुनिश्चित करें। वाद्ययंत्रों को अत्यधिक गर्मी, सीधी धूप, नमी, वर्षा एवं धूल से बचाकर रखा जाए। इलेक्ट्रॉनिक वाद्ययंत्रों के पास पानी अथवा अन्य तरल पदार्थ न रखा जाए तथा उपयोग के बाद विद्युत कनेक्शन बंद किए जाएँ।
8. नियमित सफाई एवं रख-रखाव की व्यवस्था करें। वाद्ययंत्रों की समय-समय पर सफाई, ट्यूनिंग, फिटिंग एवं आवश्यक सर्विस कराई जाए। वादन के बाद वाद्ययंत्रों को साफ करके उनके कवर या केस में सुरक्षित रखा जाए।
9. क्षतिग्रस्त वाद्ययंत्रों का उपयोग रोकें। टूटे हुए तार, बेल्ट, हानैस, स्टिक, लॉक या अन्य क्षतिग्रस्त उपकरणों को तत्काल बदलने अथवा मरम्मत कराने की व्यवस्था की जाए। बिना प्रशिक्षित व्यक्ति के वाद्ययंत्र को खोलने या उसकी मरम्मत करने का प्रयास न किया जाए।
10. विद्यार्थियों में जिम्मेदारी की भावना विकसित करें। विद्यार्थियों को वाद्ययंत्रों को सावधानीपूर्वक उपयोग करने, उपयोग के बाद साफ करने तथा निर्धारित स्थान पर रखने के लिए प्रेरित किया जाए। किसी अन्य विद्यार्थी के वाद्ययंत्र का बिना अनुमति उपयोग न करने की आदत भी विकसित की जाए।
11. संगीत को आनंददायी एवं अनुभवात्मक अधिगम का माध्यम बनाएँ। विद्यालय प्रशासन ऐसा वातावरण विकसित करे जहाँ वाद्ययंत्रों का प्रयोग केवल प्रस्तुति के लिए नहीं, बल्कि विद्यार्थियों की रचनात्मकता, अभिव्यक्ति, श्रवण कौशल, एकाग्रता, समन्वय, आत्मविश्वास एवं सहयोगात्मक अधिगम के विकास के लिए किया जाए।
12. समग्र रूप से, प्रधानाध्यापक का प्रयास होना चाहिए कि विद्यालय में उपलब्ध वाद्ययंत्र सुरक्षित रहें, नियमित रूप से उपयोग में आएँ और विद्यार्थियों के लिए संगीत सीखने, सृजन करने, साथ मिलकर कार्य करने तथा अपनी स्थानीय एवं भारतीय सांस्कृतिक विरासत से जुड़ने का प्रभावी माध्यम बनें।

संदर्भ सूची

1. **कला-समेकित अधिगम दिशानिर्देश (माध्यमिक स्तर) : NCERT**

यह NCERT द्वारा प्रकाशित दिशानिर्देश पुस्तिका है, जिसमें माध्यमिक स्तर पर कला-समेकित अधिगम के सिद्धांतों, प्रक्रियाओं एवं क्रियान्वयन संबंधी सुझावों का वर्णन किया गया है। यह शिक्षकों को विभिन्न विषयों के शिक्षण में कला के समावेश द्वारा अधिगम को रचनात्मक, अनुभवात्मक एवं प्रभावी बनाने में मार्गदर्शन प्रदान करती है।

लिंक: https://ncert.nic.in/pdf/announcement/AILG-Secondary-English.pdf

2. **NCERT पाठ्यपुस्तक : मधुरिमा (कक्षा-9)**

NCERT द्वारा प्रकाशित 'मधुरिमा' कक्षा 9 की कला शिक्षा की पाठ्यपुस्तक है। इसमें दृश्य कला, संगीत, नृत्य एवं रंगमंच के साथ भारतीय कला एवं सांस्कृतिक विरासत का अध्ययन शामिल है।

लिंक: https://ncert.nic.in/textbook.php?iemr1=0-17

3. **NCERT पाठ्यपुस्तक : हिंदुस्तानी संगीत - गायन एवं वादन (कक्षा 11)**

यह NCERT द्वारा प्रकाशित कक्षा 11 की संगीत विषय की पाठ्यपुस्तक है, जिसमें हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक पक्षों का वर्णन किया गया है। इसमें राग, ताल, स्वर-लिपि पद्धतियों, संगीत के आधार ग्रंथों, वाद्य वर्गीकरण तथा प्रमुख संगीत घरानों से संबंधित विषय शामिल हैं।

लिंक: https://ncert.nic.in/textbook.php?khgv1=0-10

4. NCERT पाठ्यपुस्तक : संगीत – तबला एवं पखावज (कक्षा 11)

यह NCERT द्वारा प्रकाशित कक्षा 11 की संगीत विषय की पाठ्यपुस्तक है, जिसमें तबला एवं पखावज वादन के सैद्धांतिक और व्यावहारिक पक्षों का अध्ययन कराया जाता है। इसमें भारतीय ताल पद्धति, लयकारी, तालों की संरचना तथा वादन संबंधी ज्ञान के माध्यम से विद्यार्थियों की संगीतात्मक समझ एवं कौशल विकसित करने पर बल दिया गया है।

लिंक: https://ncert.nic.in/textbook.php?khtp1=0-8

5. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (अंग्रेज़ी एवं हिन्दी संस्करण)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय शिक्षा व्यवस्था में व्यापक परिवर्तन की रूपरेखा प्रस्तुत करती है। इसमें समग्र विकास, अनुभवात्मक अधिगम, बहुविषयक शिक्षा, कौशल विकास तथा शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में कला एवं संस्कृति के समावेश पर विशेष बल दिया गया है।

लिंक (अंग्रेज़ी) : https://ncert.nic.in/pdf/nep/NEP_2020.pdf
लिंक (हिंदी) : https://ncert.nic.in/pdf/nep/NEP_final_HINDI.pdf

6. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा (NCF) 2023

यह दस्तावेज़ राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा से संबंधित है, जो विद्यालयी शिक्षा के उद्देश्यों, पाठ्यचर्या निर्माण, शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया एवं मूल्यांकन के लिए मार्गदर्शन प्रदान करता है। इसका उद्देश्य शिक्षा को विद्यार्थियों के समग्र विकास, रचनात्मकता एवं अनुभवात्मक अधिगम से जोड़ना है।

लिंक (अंग्रेज़ी) : https://ncf.ncert.gov.in/webadmin/assets/1f0eb504-c745-4698-a085-927dca547963
लिंक (हिंदी) : https://ncf.ncert.gov.in/webadmin/assets/a538964e-f826-4946-aa0c-08804d8471c8



राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद, बिहार, पटना द्वारा विकसित